हरिभूमि

रोहतक भूमि

रोहतक, रविवार, 26 अक्टूबर 2025

तापमान

अधिकतम 34 .2 डिग्री
न्यूनतम 14 .2 डिग्री

11 शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ ...

12 प्रदेश के लोगों की सेवा करना मेरी प्राथमिकता : प्रो. असीम घोष

खबर संक्षेप

दीन दयाल लाडो लक्ष्मी योजना के लिए करें आवेदन

रोहतक। अतिरिक्त उपायुक्त नरेन्द्र कुमार ने बताया कि दीन दयाल लाडो लक्ष्मी योजना के अंतर्गत जिला में लगभग 65 हजार लाभार्थी महिलाएं हैं, जिनमें से लगभग 25 हजार महिलाओं की आवेदन प्रक्रिया गत 24 अक्टूबर 2025 तक पूरी की जा चुकी है। इस योजना के अंतर्गत 25 अक्तूबर तक चयनित महिला लाभार्थियों को योजना के अनुसार आगामी 1 नवंबर 2025 से हरियाणा सरकार द्वारा 2100 रुपए की आर्थिक सहायता दी जाएगी।

एडीसी नरेन्द्र कुमार

मोखरा के सत्यदेव मलिक करेंगे भारत का प्रतिनिधित्व

रोहतक। जिले के गांव मोखरा निवासी सत्यदेव मलिक बहरीन की राजधानी मनामा में होने वाले यूथ एशियन गेम्स कुश्ती प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। यह प्रतियोगिता 25 अक्टूबर 2025 से शुरू हो चुकी है। उनके चयन से पूरे क्षेत्र में खुशी का माहौल है। सत्यदेव मलिक ने अपने चयन पर प्रसन्नता जताते हुए भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष संजय सिंह और महासचिव विनोद तोमर का आभार व्यक्त किया। उनका चयन यूनाइटेड विश्व कुश्ती संघ द्वारा किया गया है। उल्लेखनीय है कि सत्यदेव मालिक कैटेगरी 1 एस के अंतरराष्ट्रीय रेफरी हैं और अब तक 50 से अधिक बार भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। सत्यदेव मलिक इससे पहले भी कई प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

उद्घाटन का इंतजार कर रहा साई सेंटर का भवन

महम। कांग्रेस की भूपेंद्र सिंह हुड्डा सरकार के समय महम में भारतीय खेल प्राधिकरण का प्रशिक्षण केंद्र और छात्रावास मंजूर हुआ था। करोड़ों रुपये की लागत से यहां छात्रावास और प्रशिक्षण केंद्र की इमारतें भी बनकर तैयार हो गई। बिल्डिंग बनकर तो तैयार हो गई। लेकिन उसके बाद भाजपा सरकार सत्ता में आ गई। भाजपा को सत्ता में आए 11 साल हो गए हैं। लेकिन करोड़ों रुपए की साईं की इमारतों का उद्घाटन भी नहीं हो सका। महम के युवाओं को उम्मीद थी कि यहां पर खेलों का राष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण दिया जाएगा। लेकिन 11 साल बीत चुके हैं यहां पर साईं का सेंटर चालू नहीं हो सका। सांसद जांगड़ा सहित कई नेता चंडीगढ़ में सीएम से मिल चुके हैं।

त्योहार : चार दिवसीय उत्सव में श्रद्धालुओं ने पारंपरिक स्नान कर व्रत का संकल्प लिया

नहाए-खाए के साथ शुरू हुआ छठ महापर्व, आज खरना पूजा

व्रती महिलाओं और पुरुषों ने खुद को शुद्ध किया

आस्था का महापर्व छठ नहाए-खाए के साथ धूमधाम से शुरू हो गया। चार दिवसीय इस उत्सव में श्रद्धालुओं ने पारंपरिक स्नान कर व्रत का संकल्प लिया। महिलाओं ने सब्जी का प्रसाद ग्रहण कर मन की शुद्धता और सूर्य उपासना की तैयारियां आरंभ कीं।

छठ मइया को मालपुआ, सूजी का हलवा, चावल के लड्डू, खजूर आदि का लगता है भोग

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

पूर्वांचल और बिहार में विख्यात छठ महापर्व शनिवार को कार्तिक मास की चतुर्थी तिथि से शुरू हो गया। रोहतक में भी व्रती महिलाओं और पुरुषों ने नहाय-खाय के माध्यम से इस पर्व का शुभारंभ किया। इस दिन व्रतियों ने स्नान करके नए कपड़े पहने और शाकाहारी भोजन किया, ताकि वे सूर्य उपासना के कठिन व्रत को पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ निभा सकें। शनिवार को पूरे घरों की साफ-सफाई की गई और परिवार के सभी सदस्य शुद्ध भोजन ग्रहण कर व्रत के संकल्प में शामिल हुए। व्रतियों ने अपने ईष्ट देवताओं के साथ सूर्य देव की पूजा-अर्चना कर व्रत के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त की। स्थानीय लोग बता रहे हैं कि नहाय-खाय के दिन व्रतियों की तैयारी और शुद्धिकरण का महत्व अत्यंत होता है।

रोहतक। छठ पर्व के लिए खरीदारी कररते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

बाजारों में छठ की रौनक

छठ पर्व के अवसर पर रोहतक के बाजारों में भी उत्साह देखने को मिला। दुकानों पर पूजा सामग्री, मिठाइयां, मालपुआ, हलवा और अन्य आवश्यक वस्तुओं की खरीदारी के लिए लोग उमड़े। दुकानदारों ने बताया कि इस बार छठ के कारण बाजार पहले से अधिक सज-धज कर खड़ा था और खरीदारी में भी खासा उत्साह देखा गया। स्थानीय धार्मिक विद्वानों के अनुसार छठ पूजा में सूर्य उपासना का विशेष महत्व है। यह व्रत समृद्धि, ऐश्वर्य और परिवार में सुख-शांति के लिए रखा जाता है। व्रती इस व्रत के दौरान न केवल अपने शरीर को शुद्ध करते हैं, बल्कि मन और आत्मा की शुद्धि के माध्यम से ईश्वर की भक्ति में लीन होते हैं। रोहतक के व्रतियों ने इस बार भी छठ महापर्व को श्रद्धा, उत्साह और सामूहिक भक्ति के साथ मनाया। छठ व्रत में संकल्प, शुद्धता और श्रद्धा का संगम ही इस व्रत की सच्ची महिमा है।

खरना पूजा सबसे महत्वपूर्ण माना जाता

खरना पूजा से व्रत का वास्तविक प्रारंभ बिहार और उत्तर प्रदेश से आए व्रतियों के अनुसार छठ पूजा का दूसरा दिन, यानी खरना, सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन व्रती रात में गुड़ की खीर का सेवन करते हैं और अगले 36 घंटे का कठिन निर्जला व्रत रखते हैं। रोहतक में भी व्रतियों ने पारंपरिक प्रसाद तैयार किया। छठ मइया को मालपुआ, सूजी का हलवा, चावल के लड्डू, खजूर और अन्य व्यंजन भोग के रूप में अर्पित किए गए।

सोमवार को डूबते सूर्य को अर्घ्य दिया जाएगा

छठ महापर्व का तीसरा दिन सोमवार होता है। इस दिन व्रती पूरे दिन निर्जला व्रत रखते हैं और शाम को डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं। रोहतक के घाटों पर व्रतियों ने शाम के समय डूबते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए एकत्रित होकर विधिवत पूजा की। धार्मिक विद्वानों का कहना है कि सूर्य को अर्घ्य देने से व्रतियों की कठिन साधना सफल होती है और परिवार में सुख-शांति बनी रहती है।

छठ महापर्व का समापन मंगलवार को होगा

छठ महापर्व का समापन मंगलवार को होता है, जब उगते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। इस अवसर पर व्रती घाट पर बैठकर विधिवत पूजा करते हैं और प्रसाद ग्रहण करके व्रत का पारण करते हैं। व्रतियों का कहना है कि चार दिनों तक चलने वाले इस महापर्व में परिवार और समुदाय का साथ मिलकर पूजा करना परंपरा और संस्कृति की जीवंत झलक प्रस्तुत करता है।

शहर को स्वच्छ, हरित और सुंदर बनाने की कवायद

ग्रीन बेल्ट व पार्कों की नियमित देखभाल सुनिश्चित करें: शर्मा

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

शहर को स्वच्छ, हरित और सुंदर बनाने के उद्देश्य से नगर निगम प्रशासन लगातार कदम बढ़ा रहा है। इसी कड़ी में नगर निगम आयुक्त डॉ. आनंद कुमार शर्मा ने शनिवार को शहर के विभिन्न सेक्टरों में स्थित ग्रीन बेल्ट और पार्कों का निरीक्षण किया। इस दौरान उनके साथ वार्ड सदस्य सुशील नांदल, सहायक अभियंता शांत सुहाग और कनिष्ठ अभियंता देवेंद्र बेनिवाल सहित अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे। निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने पौधों की स्थिति, घास की कटाई, सफाई व्यवस्था, झाड़ियों की देखभाल, वृक्षों की छंटाई और नए पौधरोपण की व्यवस्थाओं का बारीकी से जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी ग्रीन बेल्ट और पार्कों की नियमित देखभाल सुनिश्चित की जाए।

भाजपा सरकार सभी समाजों के महापुरुषों की जयंती राज्य स्तर पर मना रही: बड़ौली

महम। शनिवार को महम में रोहिल्ला राजपूत समाज द्वारा महाराज रणबीर सिंह रोहिल्ला की जयंती धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम में भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली और राज्य सभा सांसद रामचंद्र जांगडा मुख्य अतिथि के रूप में पंहुचे। रोहिल्ला समाज के लोगों ने दोनों नेताओं का वहां पहुंचने पर जोरदार स्वागत किया।इस दौरान राज्य सभा सांसद रामचंद्र जांगडा ने रोहिल्ला समाज के लोगों को संबोधित करते हुए कहा की संत महापुरुष सभी समाज के होते है और सभी समाज के लोग उनसे प्रेरणा लेते हैं। बड़ौली ने कहा कि वर्तमान की भाजपा सरकार सभी समाजों के महापुरुषों की जयंती राज्य स्तर पर मना रही है और महापुरुषों का सम्मान कर रही है। कल भी हिसार में संत नामदेव रोहिला की जयंती मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की उपस्थिति में मना रहे हैं। मोहन लाल बड़ौली ने कहा कि राज्य सभा सांसद क्षेत्र के लोगों के लिए वकील का कार्य कर रहे है ।

पाड़ा मोहल्ले में शनिवार देर रात हादसा

ट्रक ने युवक को कुचला, मौत

पुलिस ने घेराबंदी कर ट्रक चालक को काबू कर लिया

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

पाड़ा मोहल्ले में शनिवार देर रात एक गंभीर सड़क हादसा हुआ, जिसमें एक युवक की मौत हो गई। स्थानीय पुलिस ने ट्रक चालक को त्वरित कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार, युवक को गंभीर चोटें आईं और उसे ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया, लेकिन उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। यह हादसा इलाके में सड़क सुरक्षा की गंभीर स्थिति को उजागर करता है और स्थानीय लोगों में गहरी चिंता पैदा कर दी है। घटना शनिवार रात लगभग 11 बजे पाड़ा मोहल्ले की मुख्य सड़क पर हुई। स्थानीय लोगों के अनुसार, तेज रफ्तार से आ रहा ट्रक अचानक युवक की ओर बढ़ा और उसे कुचल दिया। हादसे के तुरंत बाद ट्रक चालक फरार हो गया। मौके पर पहुंचे लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने बताया कि युवकों को सड़क पर अकेले देखा गया था, लेकिन चालक की तेज रफ्तार और लापरवाही ने स्थिति को गंभीर बना दिया। ट्रक चालक को पकड़ने के लिए पुलिस ने क्षेत्र में घेराबंदी कर दी और कुछ ही मिनटों में उसे गिरफ्तार कर लिया।

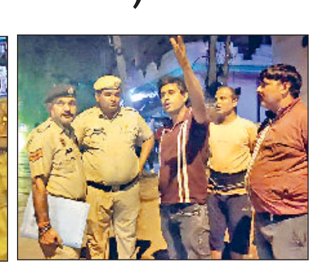

ट्रॉमा सेंटर में इलाज के दौरान दम तोड़ा

घायल युवक की हालत युवक को गंभीर चोटें आई थीं और उसे तुरंत ट्रॉमा सेंटर ले जाया गया। चिकित्सकों ने बताया कि उसे सिर और धड़ पर गंभीर चोटें आई थीं। बावजूद इसके, इलाज के दौरान युवक ने दम तोड़ दिया। मृतक युवक की पहचान 22 वर्षीय अमित, पाड़ा मोहल्ले निवासी, के रूप में हुई है।

कार्रवाई पुलिस आरोपी को रिमांड पर लेकर रिकवरी के बारे में पूछताछ कर रही

शेयर मार्केट में निवेश कर मुनाफा देने का झांसा देकर 1.18 करोड़ की ठगी, तीसरा आरोपी काबू

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

पुलिस की साइबर थाना टीम ने शेयर मार्केट में निवेश कर अधिक मुनाफा दिलाने के नाम पर 1 करोड़ 18 लाख रुपये की ठगी करने वाले गिरोह के तीसरे आरोपी को गिरफ्तार करने में बड़ी सफलता हासिल की है। आरोपी की पहचान सोनू पुत्र महाबीर निवासी सिरसा के रूप में हुई है। उसे अदालत में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है ताकि ठगी के इस जाल में शामिल अन्य लोगों और रकम की रिकवरी के बारे में विस्तृत पूछताछ की जा सके।

जांच पीएसआई सोनू को सौंपी

शिकायत प्राप्त होते ही थाना साइबर क्राइम में के तहत मामला दर्ज किया गया। मामले की जांच पीएसआई सोनू को सौंपी गई। जांच के दौरान तकनीकी विश्लेषण, बैंक खातों की ट्रांजेक्शन डिटेल्स और मोबाइल लोकेशन के आधार पर ठगों के नेटवर्क का पता लगाया गया। पुलिस ने इस ठगी में शामिल तीसरे आरोपी सोनू निवासी सिरसा को 24 अक्तूबर को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार, गिरफ्तार आरोपी इस गिरोह में फ्रॉड खातों के संचालन और पैसे की मनी ट्रेल छिपाने का काम करता था।

ये है मामला

साइबर थाना प्रभारी निरीक्षक कुलदीप सिंह ने बताया कि सेक्टर-2 निवासी बुधराम ने शिकायत दी थी कि उन्हें 6 नवंबर 2024 को एक कॉल आई। कॉल करने वाली महिला ने अपना नाम कीर्ति गुप्ता बताया और स्वयं को एसएमसी ग्लोबल सिक्योरिटी लिमिटेड की प्रतिनिधि बताया। उसने बुधराम को यह कहकर झांसे में लिया कि उनकी कंपनी शेयर मार्केट में निवेश करवाकर ग्राहकों को अधिक मुनाफा दिलाने का कार्य करती है। कीर्ति ने बुधराम को तथाकथित वीआईपी इंस्टीट्यूशनल ट्रेडिंग अकाउंट खुलवाने के लिए प्रेरित किया। उसने फॉर्म के माध्यम से बुधराम की व्यक्तिगत जानकारी हासिल कर ली और उसके नाम पर एक नकली खाता खोल दिया। इसके बाद वह बार-बार निवेश की रकम जमा करवाने के लिए दबाव डालने लगी।

बुधराम ने बताए अनुसार खाते में रुपये जमा कर दिए। 7 दिसंबर 2024 को कथित कंपनी ने उनके खाते में 2,66,500 अलॉट कर दिए, जिनकी कीमत 3,12,15,600 रुपये बताई गई। जब बुधराम ने इन आईपीओ को रद्द करने की बात कही तो कंपनी ने मना कर दिया।

बिना सत्यापन के किसी को पैसे न भेंजे

साइबर थाना प्रभारी ने आम नागरिकों से अपील की है कि वे ऑनलाइन निवेश या ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म्स पर बिना सत्यापन के किसी एजेंट या कंपनी को पैसे न भेजें। किसी भी निवेश से पहले कंपनी का वैध रजिस्ट्रेशन अथवा संबंधित प्राधिकरण से प्रमाणन अवश्य जांच लें। 1930 पर कॉल करके या पर शिकायत दर्ज करें। -**कुलदीप सिंह** साइबर थाना प्रभारी निरीक्षक

आरोपी से पूछताछ जारी

थाना प्रभारी निरीक्षक कुलदीप सिंह ने बताया कि यह गिरोह देशभर में फैले साइबर ठग नेटवर्क का हिस्सा है, जो लोगों को शेयर मार्केट या ऑनलाइन ट्रेडिंग में निवेश कर ज्यादा मुनाफा देने का लालच देकर ठगी करता है। उन्होंने कहा कि पुलिस इस नेटवर्क के अन्य सदस्यों की पहचान और रकम की रिकवरी के प्रयास में जुटी हुई है। आरोपी से पूछताछ जारी है और आने वाले दिनों में और गिरफ्तारियां हो सकती हैं।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वालों के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है
- पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12% पैसा सोने में निवेश करते थे
- अब बाजार की तेजी को देखते हुए निवेशक 18 से 22% सोने में निवेश करने लगे

गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला
जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती जाती है

सोने में निवेश सबसे सुरक्षित, लेकिन जरूरत से ज्यादा भी ठीक नहीं

सोने को शुरू से ही निवेश का सबसे सुरक्षित माध्यम माना जाता रहा है। इसने निवेशकों को कभी रुसवा नहीं किया। पिछला रिकॉर्ड देखा जाए तो सोने ने कभी भी निगेटिव रिटर्न नहीं दिया। यह चाहे किसी भी रूप में हो निवेशकों को मालामाल करता रहा है। हालांकि बाजार के जानकारों का कहना है कि सोने में निवेश करना सही है, लेकिन यह जरूरत से ज्यादा नहीं होना चाहिए। हाल फिलहाल में सोने में हुई बढ़ोतरी को देखते हुए निवेशकों ने अपने पोर्टफोलियो में इसकी हिस्सेदारी बढ़ा दी है। पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12 फीसदी पैसा सोने में निवेश करते थे, लेकिन अब निवेशक 18 से 22 फीसदी सोने में निवेश करने लगे हैं। यहां तक तो ठीक हैं, लेकिन इससे अधिक रिस्की हो सकता है। इस साल आई जबर्दस्त तेजी की वजह से सोना चर्चा में है। 21 अक्टूबर को 5 फीसदी की गिरावट के बावजूद गोल्ड ने निवेशकों को मालामाल किया है। सवाल है कि आखिर गोल्ड में इतनी तेजी की क्या वजह है? इस सवाल का जवाब पाने के लिए हमें ग्लोबल इकोनॉमी में गोल्ड की भूमिका को समझना होगा।

1944 का ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट

सेकेंड वर्ल्ड वॉर के बाद 1944 में ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट हुआ। तब अमेरिकी डॉलर में दुनिया के दूसरे देशों की करेंसीज की कीमत तय करने पर सहमति बनी। डॉलर की कीमत गोल्ड पर आधारित थी। 35 डॉलर एक औंस सोने के बराबर था। इस व्यवस्था से ग्लोबल इकोनॉमी को तब स्थिरता मिली, जब उसे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। लेकिन, अमेरिकी इकोनॉमी का आकार बढ़ने पर सरकार ने ज्यादा डॉलर छापे। एक समय ऐसा आया जब कुल डॉलर का मूल्य गोल्ड रिजर्व से ज्यादा हो गया।

1960 के दशक में एक कमोडिटी के रूप में उभरा गोल्ड

1960 का दशक आते-आते इस असंतुलन की अनदेखी करना मुश्किल हो गया। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन ने एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने डॉलर को गोल्ड में बदलने की सुविधा बंद कर दी, जिससे ब्रेटन वुड्स सिस्टम खत्म हो गया। इससे मॉनेटरी सिस्टम में गोल्ड की तय भूमिका खत्म हो गई। इसके बाद गोल्ड एक कमोडिटी बनकर रह गया। इसकी कीमतों पर मार्केट फोर्सेज का असर पड़ना शुरू हो गया, लेकिन, निवेश के सुरक्षित विकल्प को लेकर इसकी भूमिका बनी रही।

केंद्रीय बैंकों ने समझा गोल्ड का महत्व

जैसे-जैसे डॉलर कमजोर होता गया और इनफ्लेशन बढ़ता गया, वैसे-वैसे गोल्ड की अपील बढ़ती गई। जब कभी डॉलर में बड़ी कमजोरी आई या इनफ्लेशन में उछाल आया, गोल्ड निवेश के भरोसेमंद जरिया के रूप में सामने आता रहा। क्राइसिस के समय भी इसकी चमक बनी रही। इससे यह माना गया कि जब सबकुछ अनिश्चित दिख रहा तो तब भी गोल्ड में वेल्थ

की वैल्यू घटने से बचाने की क्षमता है। इसके बाद दुनिया के केंद्रीय बैंकों ने गोल्ड खरीदना शुरू कर दिया। इसका मकसद विदेशी मुद्रा भंडार का डायवर्सिफिकेशन था।

गोल्ड में तेजी की बड़ी वजहें

बीते कुछ सालों में गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला है। जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती है। इससे यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वाले इनवेस्टर्स के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है। बॉन्ड्स की रियल यील्ड ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई। जब रियल यील्ड घट जाती है तो गोल्ड की अपील बढ़ जाती है। जब हम साल 2025 के अंत के करीब है, गोल्ड 4000 डॉलर प्रति औंस से ऊपर है। गोल्ड की तेजी में डॉलर में कमजोरी, बॉन्ड्स की कम रियल यील्ड और सेंट्रल बैंकों के बीच गोल्ड की ज्यादा डिमांड का हाथ है। इसके अलावा जियोपॉलिटिकल टेंशन का असर भी इसमें शामिल है।

इकोनॉमी में गोल्ड की बढ़ती भूमिका

गोल्ड में तेजी न सिर्फ इनवेस्टर्स के लिए अहम है बल्कि इसका आर्थिक महत्व भी है। उदाहरण के लिए भारत में आरबीआई के रिजर्व में डॉलर के अलावा गोल्ड भी है। जब गोल्ड में तेजी आती है तो आरबीआई के डॉलर रिजर्व की वैल्यू बढ़ जाती है। इससे इंडिया की फाइनेंशियल पोजीशन मजबूत होती है। गोल्ड का असर भारत में कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स (सीपीआई) पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए सितंबर 2025 में गोल्ड की ज्यादा कीमतों की वजह से इंडिया के कोर इनफ्लेशन में मामूली उछाल देखने को मिला, जबकि फूड की कीमतों में गिरावट आई। इससे पता चलता है कि गोल्ड की भूमिका इकोनॉमी में कितनी ज्यादा है।

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद है। इसकी कई वजहें हैं। रियल यील्ड लगातार कम बनी हुई है। सेंट्रल बैंक के बीच गोल्ड की डिमांड बनी हुई है, लेकिन, इतिहास यह बताता है कि ऐसी तेजी के बाद गोल्ड दोबारा नई ऊंचाई पर पहुंचने से पहले कंसॉलिडेशन फेज में रहता है। इसलिए गोल्ड में तेजी जारी रहने की संभावना है, लेकिन इनवेस्टर्स को इसमें उतार चढ़ाव के लिए तैयार रहना चाहिए।

एक सीमा से ज्यादा निवेश सही नहीं

कई इनवेस्टर्स इनफ्लेशन से बचाव, करेंसी में कमजोरी और ग्लोबल इकोनॉमी में अनिश्चितता को देखते हुए गोल्ड में निवेश कर रहे हैं। लेकिन, गोल्ड में बहुत ज्यादा निवेश से आपके पोर्टफोलियो पर इसकी कीमतों में तेजी या कमजोरी का असर पढ़ना शुरू हो जता है। ऐसे में बॉन्ड बड़ा रोल निभाता है। अनिश्चित समय में तो गोल्ड का प्रदर्शन अच्छा रहता है लेकिन, जब सबकुछ ठीक चल रहा होता है तो क्या होता है? बॉन्ड्स पोर्टफोलियो में स्टैबिलिटी लाता है। साथ ही इंटरेस्ट के रूप में इससे रेगुलर इनकम होती है। यह फायदा गोल्ड में नहीं है। ऐसे इनवेस्टर्स जिन्हें रेगुलर कैश की जरूरत पड़ती है, उनके डायवर्सिफायड पोर्टफोलियो में बॉन्ड्स का होना जरूरी है।

ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे ही पैसे निकालना कितना सही

अपडेट | **बिजनेस डेस्क**

- पहले सारा पैसा निकालने पर नहीं मिलती मासिक पेंशन, पेंशन के लिए लगातार दस ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी
- ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रहेगी

अगर आप नौकरीपेशा हैं और ईपीएफ (ईपीएम) में योगदान करते हैं, तो आपके वेतन का एक हिस्सा ईपीएस यानी एंप्लाईज पेंशन स्कीम में भी जाता है। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि नौकरी छोड़ने या बीच में ब्रेक आने पर इस पैसे को फौरन निकाल लेना बेहतर है, लेकिन क्या वाकई ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे पैसे निकाल लेना सही फैसला है? कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने हाल ही में ईपीएस से जुड़े कुछ बदलाव किए हैं, हालांकि, इन बदलावों का असर पेंशन पाने की उम्र यानी 58 साल की एलिजिबिलिटी पर नहीं पड़ेगा। पेंशन पाने के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक लगातार ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी है। अगर किसी सदस्य की नौकरी चली जाती है और वह ईपीएस (ईपीएस) के लिए योगदान जारी नहीं रखना चाहता, तो वह 10 साल पूरे होने से पहले अपने सारे पैसे निकाल सकता है. पहले यह फाइनल सेटलमेंट नौकरी चले जाने के 2 महीने बाद किया जा सकता था, लेकिन अब इसके लिए 2 महीने नहीं, बल्कि 36 महीने यानी 3 साल तक इंतजार करना होगा, यानी ईपीएफओ ने अब ईपीएस के पैसे निकालना पहले की तुलना में ज्यादा मुश्किल बना दिया है, इस बदलाव का उद्देश्य यह है कि अगर ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रह सके।

10 साल से पहले पैसे निकालने का असर

ईपीएफओ के नियमों के मुताबिक आप लगातार नौकरी के 10 साल पूरे होने से पहले ईपीएस से पैसे निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसा करने पर आप आगे चलकर मिलने वाली पेंशन के लिए एलिजिबल नहीं रह जाएंगे। यानी रिटायरमेंट के बाद ईपीएस के जरिये मिलने वाली मंथली पेंशन की सुविधा खत्म हो जाएगी।ईपीएफओ के अनुसार रिटायरमेंट के समय पेंशन पाने की एलिजिबिलिटी के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक ईपीएस में सदस्य रहना जरूरी है। इसका मतलब यह है कि जल्दबाजी में पैसे निकालने से आप अपनी लंबी अवधि की आर्थिक सुरक्षा खो सकते हैं।

क्या कहते हैं आंकड़े

दिलचस्प बात यह है कि ईपीएफओ के आंकड़ों के मुताबिक करीब 75 प्रतिशत सदस्य 4 साल की सर्विस के भीतर ही पूरा पेंशन अमाउंट निकाल लेते हैं, ऐसे में उन्हें भविष्य की पेंशन और आर्थिक सुरक्षा का लाभ नहीं मिल पाता है।

फैमिली पेंशन का भी नुकसान

अगर कोई सदस्य 10 साल से पहले पैसे नहीं निकालता है और उसका निधन हो जाता है, तो उसके परिवार को अगले 3 साल तक पेंशन का लाभ मिलता है, लेकिन अगर सदस्य ने पूरे पैसे निकाल लिए हैं, तो परिवार यह लाभ नहीं ले सकता। यही वजह है कि ईपीएफओ ने ईपीएस की सदस्यता को 10 साल पूरे होने तक जारी रखने के लिए नियमों में बदलाव किए हैं। ईपीएफओ का कहना है कि ईपीएस के पैसे निकालने के लिए दो महीने की जगह 36 महीने इंतजार करने का नया प्रावधान इसीलिए लाया गया है ताकि सदस्यों की 10 साल की एलिजिबिलिटी पूरी हो जाए और उनके परिवार को भी पेंशन का लाभ मिल सके।

किन हालात में निकाल सकते हैं पैसे

हालांकि कुछ खास परिस्थितियों में पैसे निकालने का फैसला सही भी हो सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी व्यक्ति की आमदनी अच्छी खासी है या उसने पहले से अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग की हुई है, जिसके चलते वह रिटायरमेंट के बाद रेगुलर इनकम या फेमिली पेंशन पाने के लिए ईपीएस के भरोसे नहीं है, तो जरूरत पड़ने पर अपने पैसे निकाल सकता है। लेकिन जिनकी आय सीमित है और दूसरा कोई रिटायरमेंट प्लान नहीं है, तो उनके लिए ईपीएस को जारी रखना भविष्य की सुरक्षा के लिहाज से बेहतर विकल्प है। ईपीएस पेंशन स्कीम लंबे समय तक आर्थिक सुरक्षा देने के लिए बनाई गई है। अगर आप 10 साल पूरे होने से पहले पैसा निकालते हैं, तो भविष्य में पेंशन नहीं मिलेगी। साथ ही फेमिली पेंशन के तौर पर परिवार को मिलने वाली सुरक्षा का लाभ भी चला जाएगा। इसलिए नौकरी में ब्रेक या अस्थायी परेशानी की हालत में जल्दबाजी करने की बजाय सोच-समझकर फैसला करने में ही समझदारी है।

ऑफर देखकर न ललचाएं ज्यादा जरूरत होने पर ही पर्सनल लोन उठाएं, वरना यह बढ़ा सकता है परेशानी

पर्सनल लोन एग्रीमेंट पर साइन से पहले चेक करें कुछ बातें, वरना पड़ेगा पछताना

अलर्ट | **बिजनेस डेस्क**

"बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं जो करती हैं परेशान, ऐसे में ऐसी शर्तों पर पहले से ही नजर दौड़ा लें, दिक्कत नहीं होगी

कई बार हमें अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है चाहे मेडिकल इमरजेंसी हो, शादी का खर्च या फिर किसी जरूरी ट्रिप का खर्चा। ऐसे में पर्सनल लोन एक आसान रास्ता लगता है। कुछ क्लिक या एक फॉर्म भरकर पैसा खाते में आ जाता है, लेकिन यही आसानी कई बार बाद में परेशानी का कारण भी बन जाती है, अगर आपने लोन एग्रीमेंट के कागजों को ध्यान से नहीं पढ़ा। बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं, जिन पर नजर न गई तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

प्रीपेमेंट और फोरक्लोजर चार्जेज

कई लोग सोचते हैं कि लोन जल्दी चुका देंगे तो ब्याज बच जाएगा, लेकिन हर बैंक या फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन इसकी इजाजत नहीं देता। अगर आप लोन तय समय से पहले चुका देते हैं, तो आपको प्रीपेमेंट या फोरक्लोजर चार्जेज देने पड़ सकते हैं, जो आम तौर पर बाकी बचे लोन अमाउंट का 2% से 5% तक होता है। इसलिए साइन करने से पहले यह जरूर समझ लें कि आपका बैंक या एनबीएफसी पर्सनल लोन जल्दी चुकाने पर कितने चार्जेज वसूलेगा।

लेट पेमेंट और डिफॉल्ट पेनॉल्टी

एक भी ईएमआई छूटना आपके क्रेडिट स्कोर को नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन इसके साथ ही, बैंक लेट पेमेंट पर पेनाल्टी चार्ज भी वसूलते हैं। कुछ बैंक एक तय रकम लेते हैं, तो कुछ बाकी बचे ईएमआई अमाउंट का एक प्रतिशत। यही वजह है कि देर से भुगतान करने पर ब्याज से ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है। इससे बचने का सबसे आसान तरीका है ऑटो डेबिट ऑर्डर लगाना, ताकि ईएमआई समय पर कट जाए।

छिपे हुए प्रोसेसिंग व सर्विस चार्जेस

बैंक जब लोन का ब्याज दर बताते हैं, तो वह तो साफ होता है, लेकिन बाकी के चार्जेस अक्सर ध्यान नहीं जाते। जैसे प्रोसेसिंग फीस, डॉक्यूमेंटेशन फीस और जीएसटी आदि। यहां तक कि कुछ बैंक फोरक्लोजर लेटर या लोन स्टेटमेंट के लिए भी शुल्क वसूलते हैं। इसलिए हमेशा साइन करने से पहले बैंक से यह पूछें कि कुल मिलाकर आपकी जेब से कितनी रकम कटेगी। आखिरकार, जो लोन अमाउंट आपको मिलेगा, वह इन चार्जेस के बाद थोड़ी कम ही होगी।

ब्याज दर में बदलाव से जुड़ी शर्तें

अगर आपने फ्लोटिंग रेट वाला पर्सनल लोन लिया है, तो यह समझना जरूरी है कि ब्याज दर में बदलाव कब और कैसे होगा। कुछ बैंक हर तिमाही में रेट बदलते हैं, तो कुछ साल में एक बार. अगर ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आपकी ईएमआई भी बढ़ सकती है। इसलिए एग्रीमेंट में दिए गए इस क्लॉज को जरूर पढ़ें ताकि बाद में बढ़ी हुई किस्त देखकर झटका न लगे।

बीमा और क्रॉस-सेलिंग की चाल

कई बैंक पर्सनल लोन के साथ एक बीमा पॉलिसी भी जोड़ देते हैं, जो बेरोजगारी, बीमारी या मृत्यु की स्थिति में लोन को कवर करती है। सुनने में यह सुरक्षा जैसा लगता है, लेकिन अक्सर यह बीमा वैकल्पिक होता है, कुछ बैंक इसे अनिवार्य बताकर जोड़ देते हैं। इसलिए साइन करने से पहले यह साफ कर लें कि क्या यह बीमा जरूरी है, और क्या उसकी प्रीमियम लागत वाजिब है।

हर शर्त को समझना बेहद जरूरी

पर्सनल लोन एक सुविधाजनक विकल्प जरूर है, लेकिन इसके साथ जुड़ी हर शर्त को समझना बेहद जरूरी है। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान न देने से बाद में भारी ब्याज, चार्जेस या अन्य पेनाल्टी झेलनी पड़ सकती है। इसलिए अगली बार जब भी आप किसी लोन डॉक्यूमेंट पर साइन करें, तो जल्दबाजी न करें। हर पेज, हर क्लॉज को ध्यान से पढ़ें और समझें। आखिरकार, लोन से राहत तभी मिलेगी जब आप इसके हर नियम को समझदारी से निभाएंगे।

यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे

यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये भी कर सकेंगे पेमेंट

जानकारी | **बिजनेस डेस्क**

अब तक आपने म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल सिर्फ निवेश और रिटर्न कमाने के लिए किया होगा, लेकिन अब इसका इस्तेमाल पेमेंट करने में भी किया जा सकेगा। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) के नए फीचर 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये अब निवेशक यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे। यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि निवेशकों को बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका भी देता है। यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' इस फीचर के जरिए आप अपनी लिक्विड म्यूचुअल फंड होल्डिंग से सीधे यूपीआई पेमेंट कर पाएंगे। मिसाल के तौर पर अगर आपने किसी फंड हाउस के लिक्विड फंड में निवेश किया है, और वह फंड इस सुविधा को सपोर्ट करता है, तो आप अपने उस निवेश का इस्तेमाल यूपीआई के जरिये किसी पेमेंट के लिए कर पाएंगे। जैसे ही आप यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी और पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे। इसे इस तरह समझिए कि यह फीचर लिक्विड म्यूचुअल फंड को एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करने की क्षमता देता है, लेकिन फर्क यह है कि यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है। इस सुविधा को फिलहाल आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड

क्यों खास है यह फीचर

लिक्विड फंड शॉर्ट-टर्म मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं, जिनकी लिक्विडिटी बहुत ज्यादा होती है। ऐसे में जब जरूरत पड़े, तो निवेशक फौरन पैसे निकाल सकते हैं। अब 'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर से यह प्रॉसेस और आसान हो गई है, क्योंकि अब आपको पहले पैसा बैंक अकाउंट में ट्रांसफर करने की जरूरत नहीं। इसके अलावा यह फीचर आपके निवेश पर फुल लिक्विडिटी के बावजूद सेविंग अकाउंट से ज्यादा संभावित रिटर्न का फायदा भी देता है। सेविंग अकाउंट में जहां आम तौर पर 4% से कम सालाना ब्याज मिल रहा है, वहीं लिक्विड फंड इस समय करीब 6-7% तक का रिटर्न दे रहे हैं। यानी आपका पैसा बेकार पड़े रहने की बजाय बेहतर रिटर्न भी दे सकता है और जरूरत पर फौरन काम भी आ सकता है।

ऐसे आसान होगा पेमेंट

यूपीआई आज हर रोजमर्रा के लेनदेन का हिस्सा बन चुका है। किराने की दुकान से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग तक, हम सभी इसका इस्तेमाल करते हैं। अब अगर यह पेमेंट सीधे म्यूचुअल फंड से हो जाए, तो आपको अलग-अलग ऐप्स में ट्रांसफर या रिडेम्प्शन की झंझट

- यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका देगा
- जैसे ही यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी
- पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे, लिक्विड म्यूचुअल फंड एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करेगा
- यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है,
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड और बजाज फिनसर्व एएमसी जैसे फंड हाउसेज ने लॉन्च किया

नहीं झेलनी पड़ेगी। व्यक्तिगत निवेशकों के साथ-साथ छोटे बिजनेस के लिए भी यह फीचर बहुत मददगार साबित हो सकता है। वे अपने शॉर्ट-टर्म कैश को लिक्विड फंड में रखकर रिटर्न कमा सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उसी से पेमेंट कर सकते हैं। यह कैश मैनेजमेंट का स्मार्ट और फ्लेक्सिबल तरीका है।

क्या यह सेविंग से बेहतर है?

कई मामलों में हां, लेकिन कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं। सेविंग अकाउंट ज्यादा सुरक्षित होते हैं और उनमें 5 लाख रुपये तक के डिपॉजिट का इंश्योरेंस भी होता है। वहीं, लिक्विड फंड में थोड़ा मार्केट रिस्क रहता है. हालांकि यह रिस्क बहुत कम होता है, फिर भी अगर आपका लक्ष्य केवल सुरक्षा है, तो सेविंग अकाउंट ही बेहतर है।लेकिन अगर आप थोड़ा जोखिम लेने को तैयार हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा फुल लिक्विडिटी के बावजूद बेहतर रिटर्न कमाए, तो नई सुविधा आपके लिए सही विकल्प हो सकती है। हां, यह ध्यान रखना जरूरी है कि आप जिस फंड में निवेश करें, उसकी लिक्विडिटी और रिडेम्प्शन प्रोसेस भरोसेमंद हो।

यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन

'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर निवेशकों के लिए सुविधा और रिटर्न दोनों को जोड़ता है। यह दिखाता है कि भारत में डिजिटल पेमेंट और म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री कितनी तेजी से एक-दूसरे के करीब आ रही है। जो निवेशक अपने पैसों को हर वक्त रिटर्न के लिहाज से इनवेस्ट रखना चाहते हैं, उनके लिए यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन बन सकता है। बशर्ते वे इसके फायदों और रिस्क को समझकर इसका इस्तेमाल करें।

अच्छी तरह समझने के बाद करें इस्तेमाल

भले ही यह फीचर बेहद सुविधाजनक है, लेकिन निवेशकों को इसका इस्तेमाल करने से पहले कुछ बातें जरूर समझ लेनी चाहिए। लिक्विड फंड के रिटर्न अलग-अलग फंड हाउस में अलग-अलग हो सकते हैं, इसलिए औसत रिटर्न और एक्सपेंस रेशियो पर नजर रखना चाहिए. साथ ही यह जानना भी जरूरी है कि "इंस्टैंट रिडेम्प्शन" के साथ भी कुछ लिमिट्स या कट-ऑफ टाइम जुड़े हो सकते हैं। इसके अलावा, लिक्विड फंड से होने वाली कमाई पर टैक्स उसी तरह लगता है जैसे बैंक ब्याज पर. इसलिए इसे पूरी तरह इमरजेंसी फंड का विकल्प न मानें। अपने पैसे का कुछ हिस्सा हमेशा सेविंग अकाउंट में भी रखें ताकि किसी देरी की स्थिति में परेशानी न हो।

घर में कितनी रख सकते हैं चांदी कमाई पर कैसे लगता है टैक्स

बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में सोना के साथ एक और एसेट क्लास सबसे ज्यादा चर्चा में है, जो है चांदी। वजह इसमें मिल रहा सुपर रिटर्न। साल 2025 में रिटर्न के मामले में चांदी ने सोने को पीछे छोड़ दिया है। इस साल चांदी का रिटर्न 73फीसदी से अधिक रहा है। इससे निवेशकों के बीच चांदी की डिमांड बढ़ रही है, चाहे वह किसी भी फॉर्मेट में हो। तो यहां 2 बातें समझ लेना जरूरी है कि आप अपने घर में अधिक से अधिक कितना चांदी रख सकते हैं, ताकि इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का कोई झंझट न हो। वहीं इससे होने वाली कमाई पर कितना टैक्स लगता है।

चांदी रखने पर लिमिट नहीं

सोने की तरह, चांदी (जैसे सिक्के, गहने, बर्तन आदि) रखने पर इनकम टैक्स एक्ट, 1961 के तहत कोई सीमा तय नहीं की गई है। अगर चांदी कानूनी तरीके से खरीदी गई या विरासत में मिली है, तो उस पर कोई रोक नहीं है। टैक्स तभी लगता है जब आप चांदी बेचते हैं और उस पर कैपिटल गेंस (लाभ) कमाते हैं। टैक्स सिर्फ बिक्री पर या छुपाई गई संपत्ति पाए जाने पर लगता है। हालांकि घर पर कितनी भी चांदी रखने की सीमा नहीं है, लेकिन अगर आपके पास ज्यादा चांदी है, तो उसकी खरीद के प्रमाण (बिल या रसीद) संभाल कर रखना बेहतर है। अगर आपने चांदी किसी ज्वेलर, डीलर या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से खरीदी है, तो उसका असली बिल जरूर रखें। भविष्य में अगर कभी इनकम टैक्स विभाग जांच करता है, तो ये दस्तावेज आपके लिए सुरक्षा कवच बन सकते हैं।

चांदी की कमाई पर टैक्स

चांदी पर टैक्स के नियम की बात करें तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने फिजिकल सिल्वर (जैसे गहने, सिक्के, बार) खरीदी है या सिल्वर ईटीएफ या सिल्वर म्यूचुअल फंड में निवेश किया है, और आपने इसे कितने समय तक रखा है. इसलिए, टैक्स के नियम समझना जरूरी है ताकि आप सही निवेश निर्णय ले सकें।

फिजिकल फार्म में चांदी पर टैक्स

अगर आपने चांदी के गहने या सिक्के को 24 महीने से पहले बेच दिया, तो उस पर हुआ लाभ शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेंस (एसटीसीजी) माना जाएगा और यह आपकी इनकम टैक्स स्लैब की दर के अनुसार टैक्स होगा, लेकिन आपने चांदी को 24 महीने से ज्यादा समय तक रखा, तो यह लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस (एलटीसीजी) माना जाएगा। अगर चांदी 23 जुलाई 2024 या उसके बाद खरीदी गई है, तो इस पर 12.5% टैक्स लगेगा और इंडेक्सेशन का लाभ नहीं मिलेगा। वहीं 23 जुलाई 2024 से पहले खरीदी चांदी पर 20% लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगेगा इंडेक्सेशन के साथ।

सिल्वर म्यूचुअल फंड और ईटीएफ पर टैक्स

अगर आपने सिल्वर ईटीएफ या म्यूचुअल फंड को 12 महीने के अंदर बेचा, तो यह एसटीसीजी माना जाएगा और इनकम टैक्स स्लैब रेट के हिसाब से टैक्स लगेगा। अगर 12 महीने से बाद बेचा, तो यह एलटीसीजी माना जाएगा और 12.5% टैक्स लगेगा, बिना इंडेक्सेशन बेनेफिट के।

चांदी की ज्वेलरी, बिस्कुट और सिक्कों पर टैक्स

चांदी (बार, सिक्के या गहने) के मूल्य पर 3 फीसदी जीएसटी लगता है, जबकि गहनों के मेकिंग चार्ज पर 5 फीसदी जीएसटी लगाया जाता है।

खबर संक्षेप

जजपा पदाधिकारियों का कार्यालय में स्वागत

रोहतक। जननायक जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व द्वारा पार्टी संगठन का विस्तार करते हुए किसान प्रकोष्ठ, एससी प्रकोष्ठ, महिला प्रकोष्ठ, बीसी प्रकोष्ठ की कार्यकारिणी घोषित की। जेजेपी जिला रोहतक पार्टी कार्यालय में रोहतक जिला प्रभारी हरज्ञान मोखरा एवं जिलाध्यक्ष डॉ संदीप हुड्डा की अध्यक्षता में सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों का पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों द्वारा फूल माला एवं मिठाई खिलाकर सम्मानित किया। दलबीर भराण को किसान प्रकोष्ठ में प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष, ओम सिंह डोभ व सतीश राठी को किसान प्रकोष्ठ में प्रदेश संयुक्त सचिव व एससी प्रकोष्ठ जगदीश किराड़, चेयरमैन राजेंद्र वाल्मीकि को प्रदेश महासचिव को प्रदेश सचिव, ओमपति गुलिया को महिला वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष, राजवंती को महिला प्रदेश कार्यालय सचिव, अशोक प्रजापत को बी.सी. सैल प्रदेश उपाध्यक्ष, बंटी खेड़ी महम को बी. सी सैल प्रदेश संयुक्त सचिव,अजमेर सैनी को बी.सी प्रदेश कार्यालय सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

डॉ. मंगल सैन की 99वीं जयंती पर होगा कार्यक्रम

रोहतक। श्री लाल नाथ हिन्दू महाविद्यालय के संस्थापक एवं समाजसेवी स्वर्गीय डॉ. मंगल सैन की 99वीं जयंती के पावन अवसर पर आज महाविद्यालय परिसर में महाविद्यालय महोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर पूरा परिसर उत्सवमय वातावरण से सराबोर दिखाई दिया। विद्यार्थियों और स्टाफ सदस्यों ने एकजुट होकर डॉ. मंगल सैन जी के जीवन आदर्शों को नमन किया और उनके दिखाए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह 9:00 बजे दीप प्रज्वलन और डॉ. मंगल सैन के चित्र पर पुष्प अर्पण के साथ हुआ। प्राचार्य ने अपने संबोधन में कहा कि डॉ. मंगल सैन ने शिक्षा को समाज परिवर्तन का माध्यम माना और आज का यह उनके उसी आदर्श को समर्पित है।

सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा के लिए 30 अक्तूबर तक करें ऑनलाइन आवेदन

- सैनिक स्कूल कुंजपुरा में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के तहत छठी व नौवीं कक्षा में प्रवेश के लिए आमंत्रित किए गए है आवेदन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

सैनिक स्कूलों में प्रवेश के लिए हर वर्ष अखिल भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जाता है। करनाल के कुंजपुरा स्थित सैनिक स्कूल में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए छठी व नौवीं कक्षा में प्रवेश के लिए छात्र व छात्राओं से 30 अक्तूबर 2025 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए है। पात्र विद्यार्थी स्कूल की वेबसाइट https://exams.nta.nic.in/sainik-school-society/ पर आवेदन कर सकते है तथा वेबसाइट पर अखिल भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा का ब्रॉशर भी उपलब्ध है। उपायुक्त सचिन गुप्ता ने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए ओएमआर आधारित प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। अखिल भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा पेपर व पेंसिल पर आधारित होगी। इस परीक्षा में बहुविकल्पीय प्रश्न शामिल होंगे तथा ओएमआर शीट पर आधारित होगी। छठी कक्षा इस परीक्षा में कुल 300 अंक होंगे तथा 125 प्रश्न होंगे। छठी कक्षा की प्रवेश परीक्षा में गणित के 50 प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके कुल 150 अंक होंगे। बुद्धि परीक्षण के 25 प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके कुल 50 अंक होंगे। भाषा ज्ञान के 25 प्रश्न होंगे, जिनके अधिकतम अंक 50 होंगे। इसी प्रकार सामान्य ज्ञान के 25 प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके कुल 50 अंक होंगे। इस प्रकार परीक्षा में 125 प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके कुल अंक 300 होंगे।

छठी कक्षा में 120 सीटे रिक्त

उपायुक्त सचिन गुप्ता ने बताया कि कुंजपुरा सैनिक स्कूल में छठी कक्षा में छात्रों के लिए लगभग 120 सीटे रिक्त है, जिनमें से छात्राओं के लिए 108 एवं छात्राओं के लिए 12 सीटें आरक्षित है। इसी तरह कक्षा नौ में प्रवेश के लिए 20 सीटें रिक्त है, जिनमें से 18 सीटें छात्रों एवं दो सीटें छात्राओं के लिए है। सैनिक स्कूल से संबंधित राज्य केंद्र शासित प्रदेश के उम्मीदवारों के लिए 67 प्रतिशत सीटे आरक्षित होगी, जबकि अन्य राज्यों केंद्र शासित प्रदेशों के उम्मीदवारों के लिए 33 प्रतिशत सीटे आरक्षित होगी। 18—उपायुक्त सचिन गुप्ता

400 अंकों की होगी प्रवेश परीक्षा

नौवीं कक्षा में प्रवेश के लिए 400 अंकों की होगी प्रवेश परीक्षा, उपायुक्त सचिन गुप्ता ने बताया कि नौवीं कक्षा की इस परीक्षा में कुल 400 अंक होंगे तथा 150 प्रश्न होंगे। नौवीं कक्षा की प्रवेश परीक्षा में गणित के 50 प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके कुल 200 अंक होंगे। अग्रेंजी भाषा के 25 प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके 50 अंक होंगे। बुद्धि परीक्षण के 25 प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके कुल 50 अंक होंगे। इसी प्रकार सामान्य विज्ञान के 25 प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके कुल 50 अंक होंगे। सामाजिक अध्ययन के 25 प्रश्न पूछे जायेंगे जिनके अधिकतम अंक 50 होंगे।

प्रवेश परीक्षा की मेरिट के आधार पर होगा चयन

सचिन गुप्ता ने बताया कि प्रवेश केवल ओएमआर आधारित अखिल भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा की मेरिट के आधार पर होगा तथा उम्मीदवार की मेडिकल फिटनेस भी होनी चाहिए। कुल सीटों की 15 प्रतिशत अनुसूचित जाति, साढ़े सात प्रतिशत अनुसूचित जनजाति तथा 27 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग श्रेणियों के लिए आरक्षित होगी तथा शेष सीटों में से 25 प्रतिशत सीटें रक्षा कर्मियों के बच्चों के लिए आरक्षित है, जिनमें भूतपूर्व सैनिक भी शामिल है। शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए छठी कक्षा में प्रवेश के लिए उम्मीदवार का जन्म एक अप्रैल 2014 से 31 मार्च 2016 के मध्य होना चाहिए (दोनों तिथियां शामिल) तथा कक्षा 9वीं में प्रवेश के लिए उम्मीदवारों का जन्म एक अप्रैल 2011 एवं 31 मार्च 2013 के मध्य हुआ हो।

ऑनलाइन चालान प्रणाली व स्मार्ट कैमरे से हो रही शराबियों की निगरानी

शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ पुलिस सख्त, 3500 से अधिक मामले दर्ज

- हादसों में कमी लाने के उद्देश्य से पुलिस नशेड़ियों पर हुई सख्त
- शराब पीकर पकड़े गए तो नहीं मिले रियायत, होगा चालान

सड़क पर आम जनता की सुरक्षा सर्वोपरि है और नशे की वजह से होने वाली दुर्घटनाओं को रोकना प्राथमिकता है। इस लिए ट्रैफिक पुलिस नियमित रूप से अभियान चलाती रहेगी और शराब पीकर वाहन चलाने वालों पर कोई भी छूट नहीं दी जाएगी

नीरज वर्मा ▶▶| रोहतक

पुलिस नशे के अवैध कारोबार और शराब पीकर वाहन चलाने वाले पियक्कड़ चालकों के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई कर रही है। नशा और शराब पीकर वाहन चलाने से होने वाली सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए पुलिस ने विशेष अभियान चलाया है, जिससे शहर में सड़क सुरक्षा और जनता की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष ट्रैफिक पुलिस ने 1 जनवरी से लेकर 24 अक्टूबर तक 3,500 से अधिक "ड्रिंक एंड ड्राइव" प्रकरण दर्ज किए हैं, जो पिछले साल जनवरी से अक्टूबर तक दर्ज मामलों की संख्या से दोगुना है। इससे स्पष्ट होता है कि नशे में वाहन चलाने के मामलों में बढ़ोतरी हुई है और पुलिस ने इस गंभीर समस्या को रोकने के लिए विशेष ध्यान दिया है।

ट्रैफिक पुलिस के अनुसार, शहर में ज्यादातर सड़क दुर्घटनाएं नशे की हालत में वाहन चलाने वाले चालकों के कारण होती हैं। शराब पीकर वाहन चलाने की स्थिति में चालक की प्रतिक्रिया समय बहुत धीमा हो जाता है, जिससे छोटे-मोटे टकराव भी गंभीर दुर्घटना में बदल जाते हैं। ऐसे मामलों में आम लोगों को गंभीर चोटें या मृत्यु तक का सामना करना पड़ता है। एसएसपी ने इस पर ध्यान देते हुए स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ किसी भी परिस्थिति में ढील नहीं दी जाएगी।

—30—जांच करते पुलिस की टीम।

अभियान रहेगा जारी

ट्रैफिक पुलिस नियमित रूप से अभियान चलाती रहेगी और शराब पीकर वाहन चलाने वालों पर कोई भी छूट नहीं दी जाएगी। एसपी ने आम जनता से अपील की कि वे स्वयं भी सड़क सुरक्षा में सहयोग करें और शराब पीकर वाहन न चलाएं। उन्होंने कहा कि भविष्य में ऑनलाइन चालान प्रणाली, स्मार्ट कैमरा निगरानी और सड़कों पर अतिरिक्त चेकपॉइंट के माध्यम से शराब पीकर वाहन चलाने वाले चालकों की पहचान और रोकथाम को और प्रभावी बनाया जाएगा। **सुरेंद्र भोरिया, एसपी, रोहतक**

अभियान और कार्रवाई तेज

ट्रैफिक डीएसपी के निर्देशन में ट्रैफिक पुलिस ने शनिवार और रविवार को विशेष अभियान चलाकर शहर की मुख्य सड़कों और प्रमुख जंक्शन पर वाहन चालकों की जांच की। इन अभियानों में शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई की जाती है। पुलिस ने शराब पीकर वाहन चलाने वालों से जुड़ी प्रक्रिया को ऑनलाइन प्रणाली के माध्यम से भी सुदृढ़ किया है, जिससे चालान तुरंत जारी किए जा रहे हैं और ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों पर तेज कार्रवाई सुनिश्चित हो रही है। इन अभियानों के दौरान ट्रैफिक पुलिस ने केवल 3500 से अधिक चालान किए है। जिसमें बाइक, कार, ऑटो और अन्य वाहन शामिल हैं।

जागरूकता और सामुदायिक सुरक्षा

ट्रैफिक पुलिस ने न केवल अभियान चलाए हैं बल्कि जनता को जागरूक करने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग भी किया। सोशल मीडिया, लोकल रेडियो और टेलीविजन चैनलों के माध्यम से लोगों को शराब पीकर वाहन न चलाने की चेतावनी दी जा रही है। इसके अलावा स्कूल और कॉलेजों में भी यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा के बारे में सेमिनार आयोजित किए जा रहे हैं। ट्रैफिक अधिकारियों का कहना है कि शराब पीकर वाहन चलाने वाले चालक न केवल अपने जीवन के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं बल्कि अन्य सड़क उपयोगकर्ताओं के जीवन के लिए भी गंभीर जोखिम बन रहे हैं। इस वजह से अभियान के तहत उन जगहों पर विशेष चेकिंग की जाती है, जहां शराब पीकर वाहन चलाने के मामले अधिक सामने आते हैं।

पिछले साल के अनुसार मामले बढ़े

पुलिस के आंकड़ों के अनुसार, जनवरी से अक्टूबर 2025 तक 3500 से अधिक "ड्रिंक एंड ड्राइव" मामले दर्ज किए गए, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में केवल 1750 मामले सामने आए थे। इस वर्ष लगभग सभी मामलों में चालक को चालान के साथ वाहन जब्त करने की कार्रवाई भी की गई।

महोत्सव में 10 विद्याओं में प्रतिभा दिखाएंगे युवा

- मदवि के टैगोर सभागार में 6 व 7 नवंबर को होगा आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा वित्त वर्ष 2025-26 में स्वामी विवेकानंद के जन्मदिवस पर 12 से 16 जनवरी 2026 तक राष्ट्रीय युवा महोत्सव मनाने का फैसला लिया गया है। युवा महोत्सव मनाने का उद्देश्य देश में लोक परंपराओं को लुप्त होने से बचाने, युवाओं में उनके प्रति जागृति एवं राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ाना है। आगामी 6 व 7 नवंबर को महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के टैगोर सभागार में जिला स्तरीय युवा महोत्सव का आयोजन किया जाएगा।

उपायुक्त सचिन गुप्ता ने कहा कि युवा महोत्सव में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी 5 नवंबर तक माई भारत पोर्टल पर स्वयं का पंजीकरण करने उपरांत यूनिक आईडी मिलने पर राजकीय आईटीआई रोहतक में उपस्थित होकर अपना आवेदन पत्र जमा करवा सकते हैं। युवा महोत्सव में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी जिला रोहतक के स्थाई निवासी अथवा किसी शिक्षण संस्थान के छात्र हो सकते हैं। उनकी आयु एक सितंबर 2025 को 15 से 29 वर्ष के बीच होनी आवश्यक है तथा वह अपनी विद्या में पूर्ण रूप से निपुण हों। केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की इस पहल से न केवल लुप्त होती परंपराओं को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि युवाओं में भी अपनी परंपराओं एवं संस्कृति के प्रति जागरूकता आएगी। इस युवा महोत्सव में साइंस मेला, लोक नृत्य (ग्रुप), लोकगीत (ग्रुप), कहानी लेखन, कविता, पेंटिंग, भाषण प्रतियोगिता व वाद्ययंत्र प्रतियोगिता एकल एवं समूह सहित कुल 10 विद्याओं में युवा अपनी प्रतिभा दिखाएंगे। ग्रुप प्रतियोगिता में प्रतिभागियों की अधिकतम संख्या 13 होगी।

प्रतिभागियों को इन राशी से किया जाएगा सम्मानित

प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों की टीम दल को 3100 रुपए प्रतिभागी की दर से अथवा अधिकतम 31000 रुपए, जो भी कम हो, इनाम राशि दी जाएगी। द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी की टीम दल को 2100 रुपए प्रतिभागी की दर से अथवा अधिकतम 21000 रुपए, जो भी कम हो, इनाम राशि दी जाएगी। तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले टीम दल को 1100 रुपये प्रति प्रतिभागी की दर अथवा अधिकतम 11000 रुपये देय होंगे। राजकीय आईटीआई के प्रधानाचार्य राजपाल सिंधु ने बताया कि जिला से राज्य स्तर पर इस युवा महोत्सव का आयोजन होगा। जिला की विजेता और राज्य की विजेता टीमें राष्ट्रीय स्तर पर युवा महोत्सव में भाग लेंगी।

द आर्यन स्कूल में अंतर्गृह सामूहिक चर्चा आयोजित

रोहतक। द आर्यन ग्लोबल विद्यालय में अंतर्गृह सामूहिक चर्चा प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। विद्यालय के सभागार में आयोजित इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में सार्वजनिक बोलने की कला, तार्किक चिंतन, टीमवर्क और विचार अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करना था। चर्चा के मुख्य विषय "डिजिटल फुटप्रिंट" और "पौराणिक कथाओं का जीवन में महत्व" रहे। इन विषयों पर विद्यार्थियों ने इंटरनेट के जिम्मेदार उपयोग, डिजिटल युग में निजता की सुरक्षा, तथा भारतीय संस्कृति और पौराणिक कथाओं से मिलने वाले जीवन मूल्यों पर अपने सारगर्भित विचार रखे।

जजपा का प्रदेश में नहीं बचा कोई जनाधार, इनेलो की बढ़ती लोकप्रियता से दिगविजय का बिगड़ा मानसिक संतुलन: मंजीत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

इनेलो के प्रदेश सचिव मंजीत कन्हेली ने जजपा नेता दिगविजय चौटाला के पहलवानों को बदमाश और मोटी मोटी चैन पहनकर आने के बयान को लेकर कड़ी प्रतिक्रिया दी और कहा कि जजपा का प्रदेश में कोई जनाधार नहीं बचा है। दिगविजय का मानसिक संतुलन बिगड़ गया है, जो इस तरह के बयान दे रहे है। साथ ही उन्होंने कहा कि यह बयान देकर दिगविजय ने मेडल लेकर देश का नाम रोशन करने वाले खिलाडिय़ों का अपमान किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा के साथ गठबंधन में रहकर जजपा ने सिर्फ प्रदेश की जनता को लूटने व सिर्फ बरगलाने काम किया है और यह प्रदेश की जनता भी अच्छे से जानती है। इनेलो प्रदेश सचिव मंजीत कन्हेली शनिवार को गांव बलम्ब गढ़ी में कबड्डी प्रतियोगिता के आयोजन के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। साथ ही उन्होंने कांग्रेस पर भी निशाना साधा और कहा कि भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को संगठन में अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिसका जीता जागता उदाहरण कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राव नरेन्द्र सिंह है, जिनकी सीएलयू सीडी मामला प्रदेश का बचा बचा जानता है और अब मामला अदालत में है, जिससे दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।

कांग्रेस भाजपा पर लगाया मिली भगत का आरोप

आगे कहा इनेलो ने सीएलयू सीडी मामला उठाया था और पूरे सबूत भी दिए थे, लेकिन भाजपा व कांग्रेस की मिलीभगत के चलते इस मामले को दबा दिया गया, लेकिन अब अदालत पूरा न्याय करेगी। कहा कि कांग्रेस व भाजपा आपस में मिली हुई है और प्रदेश की जनता भी यह समझ चुकी है। उउन्होंने एडीजीपी वाई पूरण कुमार व एएसआई संदीप लाठर सुसाइड मामले की सीबीआई से जांच करवाने की भी मांग की।

पठानिया पब्लिक स्कूल में चार दिवसीय इंटरक्लास फुटबॉल प्रतियोगिता का हुआ शानदार आगाज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

पठानिया पब्लिक स्कूल में 25 से 29 अक्तूबर तक चलने वाली चार दिवसीय इंटरक्लास फुटबॉल प्रतियोगिता का शनिवार को शुभारंभ हुआ। इस प्रतियोगिता में कक्षा छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन विद्यालय परिसर में पठानिया पब्लिक स्कूल और शहज़ाम स्पोर्ट्स के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। शहज़ाम स्पोर्ट्स के मैनेजर सुमित काजले ने स्कूल निदेशक अंशुल पठानिया, को-फाउंडर वर्षा पठानिया, प्रधानाचार्या तन्वी पठानिया और उप-प्रधानाचार्या प्रीति ढांडा का मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत किया। विद्यालय के कोच विभू श्रीवास्तव और मोनिका राजपूत ने विद्यालय प्रबंधन समिति का छात्रों में खेल भावना को प्रोत्साहित करने के लिए आभार व्यक्त किया। प्रतियोगिता का संचालन विद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के शिक्षक मोहन लाल, इजहार, सुरेश, मंदीप, सुमित, विभू श्रीवास्तव और मोनिका राजपूत के निर्देशन में किया गया।

रोहतक। खिलाड़ियों से परिचय करते स्कूल निदेशक अंशुल पठानिया। और प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी।

खेलों के प्रति छात्रों को किया प्रेरित

संचालन का दायित्व कक्षा सातवीं की छात्राओं तनु, वाणी और विधि ने शिक्षिका मोनिका पाहवा के सान्निध्य में निभाया। इस अवसर पर स्कूल निदेशक अंशुल पठानिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेलने से शरीर स्वस्थ, स्फूर्तिमय और मन एकाग्र होता है। खेल व्यक्ति में अनुशासन व नियमपालन की भावना विकसित करते हैं। प्रतियोगिता के सफल आयोजन में प्रधानाचार्या तन्वी पठानिया और उप-प्रधानाचार्या प्रीति ढांडा का योगदान उल्लेखनीय रहा। इस अवसर पर समन्वयक अनु सहरावत, प्रभा शर्मा आदि मौजूद रहे।

हरियाणा स्टेट पेंशनर्स समाज का मेम्बरशिप अभियान प्रेम नगर में आयोजित, संगठन को मजबूत पर बल

- मेम्बरशिप अभियान में सैकड़ों लोगों ने भाग लिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

हरियाणा स्टेट पेंशनर्स समाज का एक प्रतिनिधिमंडल शनिवार को प्रेम नगर कॉलोनी की धर्मशाला में अपने मेम्बरशिप अभियान को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से पहुंचा। इस मोटिवेशनल कार्यक्रम में प्रेम नगर और आसपास की कॉलोनियों के कई पेंशनर्स और वरिष्ठ नागरिकों ने भाग लिया। मीटिंग में दुर्गा कॉलोनी, सुखपुरा गांव, उत्तम विहार, हैफेड रोड और सैनी रोड क्षेत्र से भी पेंशनर्स शामिल हुए।

रोहतक। बैठक को सम्बोधित करते राज्य प्रधान वीरेंद्र शर्मा। फोटो: हरिभूमि

कार्यक्रम में संगठन को मजबूत बनाने और ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को जोड़ने पर जोर दिया गया। उपस्थित पेंशनर्स ने आश्वासन दिया कि वे गली-गली जाकर अभियान को आगे बढ़ाएंगे। प्रतिनिधिमंडल ने सदस्यों को संगठन की मांगों के बारे में अवगत कराया और जिला रोहतक की हर महीने की 5 तारीख को होने वाली मासिक बैठक में भाग लेने का न्योता दिया। इस मौके पर राज्य प्रधान वीरेंद्र शर्मा, जिला चेयरमैन देबी सिंह देशवाल, पूर्व राज्य उपप्रधान आनन्द स्वरूप, रामचंद्र शर्मा, ऋषिदेव रोहिल्ला, राजेंद्र सैनी और दयानंद सैनी मौजूद रहे। वीरेंद्र शर्मा ने संगठन को मजबूत बनाने की अपील की और कॉलोनियों में रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन बनाने पर बल दिया। बैठक की अध्यक्षता सेवानिवृत्त कॉलेज प्राचार्य मधुकर विद्यालंकार ने की और संचालन आनन्द स्वरूप ने किया। कार्यक्रम में 55 से अधिक पेंशनर्स और वरिष्ठ नागरिक उपस्थित रहे।

एचडी पब्लिक स्कूल के तीन योग सितारों का राज्य स्तर पर चयन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

एचडी पब्लिक स्कूल के प्रतिभाशाली योग खिलाड़ियों ने अगस्त्य इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित 7वीं जिला स्तरीय खेल प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम रोशन किया। विद्यालय की छात्रा सोनाक्षी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए आर्टिस्टिक पेयर में प्रथम स्थान, ट्रेडिशनल योग में द्वितीय स्थान और रिदमिक पेयर में तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं छात्र आर्यन ने रिदमिक पेयर में प्रथम स्थान तथा आर्टिस्टिक सोलो में तृतीय स्थान हासिल किया। छात्र लक्षित ने भी रिदमिक पेयर में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। इन उत्कृष्ट उपलब्धियों के आधार पर सोनाक्षी, आर्यन और लक्षित तीनों छात्रों का चयन राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता के लिए किया गया है। इस उपलब्धि पर विद्यालय परिवार ने तीनों योग सितारों को हार्दिक बधाई दी और उनकी मार्गदर्शक योग शिक्षिका एकता का विशेष आभार व्यक्त किया, जिनके कुशल प्रशिक्षण से यह सफलता संभव हुई। विद्यालय के निदेशक सुरेन्द्र सिंह फोगाट और शैक्षिक निदेशक कृष्णा बल्हारा फोगाट ने कहा कि एचडी स्कूल के विद्यार्थियों ने परिश्रम और अनुशासन से यह सिद्ध किया है कि सफलता उसी की होती है जो स्वयं पर विश्वास रखता है। उन्होंने कहा कि विद्यालय का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी की प्रतिभा को पहचान देना और सफलता को परंपरा बनाना है।

फ्लाई ऑवर बनाने के लिए तैयार की जा रही डीपीआर

महम। दिल्ली हिसार राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर 9 पर महम चीनी मिल के पास भैणी महाराजपुर गांव में हाइवे का बाइपास नहीं बनाया गया है, जिस वजह से वाहन चालकों को गांव के बीच से आवागमन में परेशानी हो रही है। वाहन का अधिक दबाव और गांव के गंदे पानी की निकासी का सही इंतजाम न होने की वजह से यहां पर रोड में गहरे गड्ढे बने रहते हैं। बारिश के दिनों में तो यहां पर लंबे जाम लगते हैं। जाम की वजह से जहां वाहन चालकों को परेशानी होती है, वहीं ग्रामीणों को भी राजमर्रा के कामों में काफी दिक्कत होती है। फ्लाई ऑवर बनने से राहत मिलेगी।

NAME CHANGE

WE RAJENDER & MUNNI ARE LEGALLY FATHER & MOTHER OF M'S NO 15749905L Rank HAV SUDHIR RESIDENT VILL & POST OFFICE GARNAUTHI TEHSIL KALANAUR DISTT ROHTAK STATE HARYANA. DECLARE THAT 'OUR NAME & DOB IS WRONGLY MENTIONED RAJENDER SINGH D.O.B. 01/01/1959 & MUNNI DEVI IN OUR SON'S SERVICE DOCUMENTS. OUR CORRECT NAME & DOB IS RAJENDER 01/01/1957 & MUNNI. AFF NO T-999968 DT 15/10/2025 & AFF NO T-999968/99969 VINOD DHAWAN NOTARY. (HARYANA) COURT.

विद्यार्थियों को जीवन में कड़ी मेहनत कर उच्च लक्ष्य हासिल करने का दिया संदेश

प्रदेश के लोगों की सेवा करना मेरी प्राथमिकता : प्रो. असीम घोष

गांव खरावड़ के स्कूल में बच्चों के साथ किया संवाद, मेहनत का दिया गुरुमंत्र

रोहतक। कार्यक्रम का शुभारंभ करते राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष तथा निरीक्षण करते मुख्यअतिथि महामहिम राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष और मिड-डे-मिल में बनाया हलवा चखते महामहिम राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष व मित्रा घोष। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने अपनी धर्मपत्नी मित्रा घोष के साथ शनिवार को जिला के सांपला खंड के गांव खरावड़ स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का दौरा किया। उन्होंने कहा कि वे हरियाणा के लोगों की सेवा करने के लिए यहां आए है। उन्होंने विद्यालय में आवश्यक कार्यों के लिए 5 लाख रुपए की धनराशि देने की घोषणा की। उन्होंने विद्यालय परिसर में दीप प्रज्वलित कर प्राथमिक कक्षाओं का निरीक्षण किया तथा बच्चों के साथ वार्तालाप करते हुए कहा कि वे कठिन परिश्रम कर पढ़ाई करें और अपने जीवन में उच्च लक्ष्य हासिल करें। उन्होंने विद्यालय में शिक्षा विभाग द्वारा लगाये गए स्टॉल का निरीक्षण किया तथा प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ बातचीत की। कहा कि वे विद्यालय का स्वच्छ प्रांगण एवं बच्चों के लिए बेहतर सुविधाएं देखकर खुश है। विद्यालय का स्टाफ सभी आवश्यक उपकरणों से युक्त है। विभाग द्वारा हरियाणा निपुण मिशन की उपलब्धियों एवं एफएलएन द्वार पर लगाये गए स्टॉल का अवलोकन किया।

हरियाणा का खेलों के क्षेत्र में प्रथम स्थान

राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने कहा कि वे अपनी यात्रा के दौरान प्राथमिक विद्यालयों तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का निरीक्षण अवश्य कर रहे है। हरियाणा प्रदेश खेलों के लिए देशभर में प्रथम स्थान पर है। हर विद्यालय प्रांगण में खेल का मैदान अवश्य होना चाहिए ताकि बच्चों में खेल के प्रति और ज्यादा रूचि पैदा हो। उन्होंने बच्चों को चोकलेट भी वितरित की। उन्होंने मीडिया प्रतिनिधियों से संवाद करते हुए कहा कि अधिकारियों द्वारा विद्यालय प्रांगण में सफाई सुनिश्चित की गई है तथा बच्चों के पढने के लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई है।

हरियाणा सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 को किया लागू, नागरिक दें पूरा समर्थन

प्रो. असीम कुमार घोष ने कहा कि सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में सुधारों के दृष्टिगत नई शिक्षा नीति 2020 लागू की है। हरियाणा द्वारा प्रदेश में नई शिक्षा नीति के प्रावधानों को पूरी तरह लागू किया है। उन्होंने नागरिकों का आह्वान किया कि वे सरकार की इस पहल को पूरा समर्थन दें। नई शिक्षा नीति से शिक्षा के क्षेत्र में अनेक बदलाव होंगे। उन्होंने कहा कि कोई भी नई प्रणाली शुरू करते समय कुछ परेशानियां होती है, जिनका दृढ़ता के साथ सामना करना चाहिए।

हेलीपेड पर प्रशासन एवं भाजपा पदाधिकारियों ने किया स्वागत

राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष एवं उनकी धर्मपत्नी मित्रा घोष का स्थानीय बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय प्रांगण में हेलीपेड पर पहुंचने पर बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति महंत बालक नाथ योगी, उपायुक्त सचिन गुप्ता, नगर निगम आयुक्त डॉ. आनंद शर्मा, मेयर राम अवतार वाल्मीकि, भाजपा के प्रदेश कोषाध्यक्ष अजय बंसल, भाजपा के जिला अध्यक्ष रणबीर ढाका, पूर्व मेयर मनमोहन गोयल, प्रदेश सचिव रेनू डाबला ने पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

मिड-डे-मिल में पकाये गए कढ़ी-पकौड़ा का स्वाद चखा

विद्यालय परिसर में शौचालयों, पुस्तकालय, विज्ञान एवं गणित प्रयोगशाला, मिड-डे-मिल किचन एवं किचन गार्डन का भी अवलोकन किया। राज्यपाल ने मिड-डे-मिल में बनाया हलवा चखा तथा अधिकारियों की खाने की गुणवत्ता के लिए सराहना की। मित्रा घोष ने मिड-डे-मिल में पकाये गए कढ़ी-पकौड़ा का स्वाद चखा। उन्होंने विद्यालय परिसर में खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाडियों से बातचीत की तथा उनके उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया।

रोहतक। कार्यक्रम में मुख्यअतिथि महामहिम राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष को स्मृति चिन्ह देते समाज सेवी राजेश जैन। फोटो : हरिभूमि

खरावड़ पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल का किया गया नागरिक अभिनंदन

अतिरिक्त उपायुक्त नरेंद्र कुमार, जिला शिक्षा अधिकारी मनजीत मलिक, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी दिलजीत सिंह, जिला परियोजना समन्वयक बिजेंद्र हुड्डा व शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारियों व स्टाफ तथा ग्रामीणों ने महामहिम राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष व उनकी धर्मपत्नी मित्रा घोष का गांव के विद्यालय प्रांगण में पहुंचने पर पुष्पगुच्छ भेंट कर नागरिक अभिनंदन किया। राज्यपाल को हाथ से तैयार किया गया चित्र, शॉल व पौधा भेंट कर सम्मानित किया। अधिकारियों ने महामहिम राज्यपाल की धर्मपत्नी मित्रा घोष को स्मृति चिन्ह, शॉल व पौधा भेंट कर सम्मानित किया। ग्राम पंचायत की ओर से सरपंच प्रतिनिधि दीपक मलिक एवं गांव के बुजुर्गों ने राज्यपाल को मान-सम्मान का प्रतीक पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल के एडीसी स्क्वाड्रन लीडर मोहन कृष्णा, एसएमओ डॉ. राकेश तलवार, व्यक्ति सहायक शंख चटर्जी व राहुल डागर के अलावा एएसपी प्रतीक अग्रावल, उपमंडलाधीश आशीष कुमार एवं मुकुंद तंवर, क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण के सचिव विरेंद्र ढुल भी मौजूद रहे।

पीजीआईएमएस के विकास को हर संभव मदद देगी सरकार

रोहतक। सिविल अस्पताल में राज्यपाल असीम कुमार घोष के साथ सिविल सर्जन डॉक्टर रमेश चंद्र व डॉक्टरों की टीम।

रोहतक। राज्यपाल असीम कुमार घोष को सम्मानित करते कुलपति डॉ. एचके अग्रवाल।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा पंडित बीडी शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के विकास के लिए हर संभव मदद उपलब्ध करवाई जाएगी। विश्वविद्यालय में उच्च गुणवत्ता शोध के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है। वे प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में आधारभूत ढांचा को मजबूत करने की दिशा में कार्य करेंगे। प्रो. असीम कुमार घोष ने विश्वविद्यालय को बच्चों की शिक्षा एवं स्वच्छ पेयजल तथा मरीजों के लिए आवश्यक उपकरणों की खरीद के लिए अपने स्वैच्छिक कोष से 5 लाख रुपए की धनराशि देने की घोषणा की। राज्यपाल स्थानीय पंडित बीडी शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के फैकल्टी सदस्यों के साथ आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

■ राज्यपाल ने स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय को स्वैच्छिक कोष से 5 लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की

स्मृतिचिन्ह व शॉल भेंट कर सम्मानित किया

प्रो. असीम कुमार घोष विश्वविद्यालय के चांसलर भी है। विश्वविद्यालय परिसर पहुंचने पर विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा राज्यपाल उनकी धर्मपत्नी मित्रा घोष का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया तथा उन्हें स्मृतिचिन्ह व शॉल भेंट कर सम्मानित किया। राज्यपाल ने कहा कि हरियाणा के गठन के बाद हरियाणा में सूचना तकनीकी, शिक्षा, खेल तथा चिकित्सा सहित अन्य सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की है। उन्होंने स्वास्थ्य व शिक्षा क्षेत्र के विकास के लिए मुख्यमंत्री से ज्यादा बजट अलॉट करने बारे बात की है। प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में ढांचागत सुविधाओं को सुदृढ़ करने की दिशा में और कार्य किया जाएगा। सरकार द्वारा नागरिकों को गुणवत्ता परक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए कृतसंकल्प है। नागरिकों को सरकारी अस्पतालों में निजी अस्पतालों जैसी सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए कदम उठाये जा रहे है। विश्वविद्यालय के डॉक्टरों ने कोविड महामारी के दौरान सराहनीय कार्य किया है तथा अपनी क्षमता व प्रतिभा का बेहतरीन प्रदर्शन किया है।

कुलपति डॉ. एचके अग्रवाल ने उपलब्धियों की जानकारी

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एचके अग्रवाल ने महामहिम राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के चांसलर प्रो. असीम कुमार घोष तथा उनकी धर्मपत्नी मित्रा घोष का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्ष 2008 में विश्वविद्यालय के साथ 55 कॉलेज समबद्घ थे और अब इनकी संख्या बढक़र 155 हो गई है। विश्वविद्यालय 379 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा विश्वविद्यालय का परिसर हरा-भरा है। विश्वविद्यालय को ग्रीन यूनिवर्सिटी बनाने की दिशा में अनेक कदम उठाये गए है। सरकार द्वारा शुरू की गई सभी स्वास्थ्य योजनाओं का विश्वविद्यालय में क्रियान्वयन किया जा रहा है।

राज्यपाल ने नागरिक अस्पताल का दौरा कर लिया सुविधाओं का जायजा

राज्यपाल असीम कुमार घोष ने सामान्य अस्पताल रोहतक का दौरा करके सुविधाओं का जायजा लिया। राज्यपाल ने आपातकालीन कक्ष का निरीक्षण कर वहां पर उपचाराधीन मरीजों से सुविधाओं बारे बातचीत की। इसके उपरांत उन्होंने बच्चों के वार्ड का भी निरीक्षण किया। अस्पताल के स्टाफ से बातचीत की। स्टाफ के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की। अस्पताल में उपलब्ध दवाइयां के बारे में भी राज्यपाल ने जानकारी ली। स्टाफ से चुनौतियां व मांग के बारे में भी राज्यपाल ने फीडबैक ली। अस्पताल परिसर में पौधारोपण भी किया। इस दौरान सिविल सर्जन डॉक्टर रमेश चंद्र ने राज्यपाल को अस्पताल के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

रोहतक। हरियाणा के राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष के साथ मीटिंग करते कुलपति प्रो. राजबीर सिंह, डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. एससी मलिक और रजिस्ट्रार डॉ. कृष्णकांत। फोटो : हरिभूमि

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में भी पधारे राज्यपाल और कुलाधिपति प्रो. असीम कुमार घोष

रोहतक। हरियाणा के राज्यपाल और महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. असीम कुमार घोष शनिवार को विश्वविद्यालय में पधारे। उनका हार्दिक स्वागत कुलपति प्रो. राजबीर सिंह, डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. एससी मलिक और रजिस्ट्रार डॉ. कृष्णकांत ने किया। कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने विश्वविद्यालय की विभिन्न क्षेत्रों में विकास यात्रा के बारे में अवगत करवाया। खेल, शिक्षा, नवाचार, जीवन कौशल हर क्षेत्र में विश्वविद्यालय प्रगति पथ पर है। राज्यपाल ने एमडीयू की सफलता, स्वच्छ और हरित परिसर को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रो. राजबीर सिंह के नेतृत्व में विश्वविद्यालय तेजी से प्रगति कर रहा है। कुलाधिपति ने यह भी कहा की एमडीयू को राज्यपाल कार्यालय से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। इस अवसर पर राज्य की प्रथम महिला, मित्रा घोष भी रही। उनका स्वागत डीन कॉलेज डेवलपमेंट काउंसिल प्रो. विनीता हुड्डा, चीफ वार्डन (गर्ल्स) प्रो. सपना गर्ग और प्रो. प्रतिमा देवी ने किया।

एमकेजेके कॉलेज में छात्राओं के कैपेसिटी बिल्डिंग व एम्प्लॉयबिलिटी पर होगा फोकस

शैक्षणिक उन्नति के लिए कार्यक्रम, कार्यशालाएं, विस्तार व्याख्यान और प्रशिक्षण मॉड्यूल्स आयोजित होंगे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

महारानी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय में छात्राओं की कैपेसिटी बिल्डिंग, एम्प्लॉयबिलिटी और शैक्षणिक उन्नति के लिए विभिन्न कार्यक्रम, कार्यशालाएं, विस्तार व्याख्यान और प्रशिक्षण मॉड्यूल्स आयोजित किए जाएंगे। विशेष ध्यान छात्राओं के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य और संस्कार एवं मूल्य विकास पर रहेगा। इस आशय का निर्णय महाविद्यालय की इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल की विशेष बैठक में लिया गया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. रश्मि लोहचब ने बताया कि बैठक में यह भी तय किया गया कि न केवल छात्राओं बल्कि टीचिंग एवं नॉन-टीचिंग स्टाफ सदस्यों के स्किल डेवलपमेंट और कैपेसिटी बिल्डिंग के लिए भी नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

रोहतक। बैठक में विचार रखते एमडीयू के प्राध्यापक सुनित मुखर्जी।

बहुमूल्य सुझाव साझा किए

बैठक में बतौर विशेषज्ञ बीपीएस महिला विश्वविद्यालय, खानपुर के प्रो. संकेत विज, सेवानिवृत्त अधिकारी ब्रिगेडियर एमएस हुड्डा और एमडीयू रोहतक के प्राध्यापक सुनित मुखर्जी ने भाग लिया। इन विशेषज्ञों ने शैक्षणिक, प्रशासनिक तथा कम्युनिटी आउटरीच की गुणवत्ता अभिवृद्धि को लेकर बहुमूल्य सुझाव साझा किए। छात्रा प्रतिनिधि दीपांशी और पलक ने छात्राओं की जरूरतों और अपेक्षाओं पर फीडबैक प्रस्तुत किया। बैठक का संचालन आईक्यूएसी नोडल अधिकारी एवं लाइब्रेरियन उर्मिला राठी ने किया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में 16 छात्रों ने दिखाई प्रतिभा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के फैकल्टी क्लब में पब्लिक स्पीकिंग कैंप के अंतिम दिवस पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में मेंटॉर अंकिता के निर्देशन में 16 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अपने विचारों की स्पष्टता तथा प्रभावशाली अभिव्यक्ति से सभी को प्रभावित किया। प्रतियोगिता में पक्ष में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों में अक्षिता ने प्रथम स्थान, हिरुद्या ने द्वितीय स्थान तथा तीजल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं, विपक्ष में शौर्य ने प्रथम स्थान, दिविजा ने द्वितीय स्थान तथा लक्षित ने तृतीय स्थान हासिल किया। कार्यक्रम का मूल्यांकन जज जतिन मलिक और आशीष द्वारा किया गया। छात्रों के आत्मविश्वास और वक्तृत्व कौशल की सराहना करते हुए कहा कि इस कैंप ने विद्यार्थियों को जीवन के कई महत्वपूर्ण पाठ सिखाए हैं। अब वे समझ पाए कि बोलने की कला हमारे दैनिक जीवन को कितना प्रभावित करती है। फैकल्टी क्लब की अध्यक्ष प्रो. सीमा सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों के इतनी कम उम्र में इतने अधिक आत्मविश्वास होने की सराहना की। उन्होंने विद्यार्थियों को निरंतर अभ्यास करते रहने के लिए प्रेरित किया, ताकि वे आत्मविश्वास के साथ विचारों को अभिव्यक्त कर सकें।

■ महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के फैकल्टी क्लब में विद्यार्थियों को जीवन के कई अहम पाठ सिखाए

एमडीएन पब्लिक स्कूल की छात्रा सीमा ने राज्य स्तरीय हैंडबॉल प्रतियोगिता में हासिल किया तृतीय स्थान

रोहतक। शिव मंदिर किलोई में आयोजित राज्य स्तरीय हैंडबॉल प्रतियोगिता में एमडीएन पब्लिक स्कूल की कक्षा आठवीं 'ब्रिलियंट बंच' की छात्रा सीमा ने अपने उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन के बल पर तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया।प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न जिलों की टीमों ने भाग लिया। सीमा ने अपने संतुलित खेल, फुर्ती और आत्मविश्वास से सभी का ध्यान आकर्षित किया। उनके प्रदर्शन ने यह साबित किया कि संयम, निरंतर अभ्यास और दृढ़ संकल्प से सफलता प्राप्त की जा सकती है। विद्यालय की प्रधानाचार्या मिस मीनू टहल्यानी ने सीमा की इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी और कहा कि एमडीएन की छात्राएं शिक्षा, कला और खेल- तीनों क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। उन्होंने कहा कि सीमा की यह उपलब्धि न केवल विद्यालय के लिए गर्व का विषय है, बल्कि अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है।

■ संयम, निरंतर अभ्यास और दृढ़ संकल्प से हासिल कर सकते हैं

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20,
फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

जानकारी | एएसपी शशिशेखर बोले, नशा 40 वर्ष से कम उम्र के युवाओं में तेजी से फैल रहा

अपने परिवार व साथियों को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करें व नशामुक्ति में अभियान में पुलिस का सहयोग करें

गांव सुनारिया में आमजन को साइबर, महिला अपराध और नशे के खिलाफ किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

सहायक पुलिस अधीक्षक वाईवीआर शशिशेखर ने शनिवार को गांव सुनारिया में आमजन को साइबर अपराध, महिलाओं के विरुद्ध अपराध, नशे और यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया। इस मौके पर उपनि अमर, उपनि नरेश, पीएसआई दिनेश, पीएसआई साक्षी और सउपनि मोहन सहित अन्य पुलिस अधिकारी भी मौजूद रहे। एएसपी ने बताया कि नशा मुख्य रूप से 40 वर्ष से कम उम्र के युवाओं में तेजी से फैल रहा है। युवा नशीली दवाओं, ड्रग्स और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन कर रहे हैं, जिससे उनमें मानसिक, शारीरिक और आर्थिक कमजोरी आती है और अपराध की प्रवृत्ति बढ़ती है। उन्होंने आमजन से अपील की कि वे स्वयं नशे से दूर रहें, अपने परिवार और साथी युवाओं को भी नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करें और नशामुक्ति में पुलिस का सहयोग करें। महिला सुरक्षा के बारे में एएसपी ने कहा कि पुलिस द्वारा महिलाओं को सुरक्षित माहौल प्रदान करने के लिए सख्त कदम उठाए जा रहे हैं। महिलाओं के विरुद्ध अपराध की प्रत्येक शिकायत पर गहन जांच की जा रही है और उच्च स्तर तक निगरानी रखी जा रही है।

एएसपी ने दिए अहम सुझाव

एएसपी ने आमजन को सलाह दी कि वे अपने कंप्यूटर और मोबाइल डिवाइस को सुरक्षित रखें, सोशल मीडिया और बैंक अकाउंट की सुरक्षा सुनिश्चित करें। यदि किसी व्यक्ति के साथ साइबर अपराध घटित होता है, तो तुरंत 1930 पर शिकायत दर्ज करें।

मॉडल स्कूल में 2000 बैच के छात्रों ने रियूनियन समारोह में भाग लिया

रोहतक। अंबेडकर चौक स्थित मॉडल स्कूल में वर्ष 2000 बैच के पास आउट विद्यार्थियों का रियूनियन समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। विद्यालय प्रांगण में हुए इस आयोजन में अधिकतर पूर्व विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और पुराने दिनों को याद करते हुए भावनात्मक पल साझा किए। कार्यक्रम में पूर्व विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों को भी आमंत्रित किया था। अपने पुराने विद्यार्थियों को देखकर सभी सेवानिवृत्त अध्यापकों के चेहरों पर प्रसन्नता और गर्व की विशेष चमक दिखाई दी। उन्होंने इस आयोजन के लिए विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया और उन्हें आगे भी जीवन में प्रगति करते रहने का आशीर्वाद दिया।

उड़ने के लिए तैयार फ्लाइंग कार

आसमान में उड़ते हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर को तो हम सबने देखा है। अब बस कुछ ही वर्षों में आस-पास की दूरियों को तय करने के लिए फ्लाइंग कारें भी उड़ती हुई दिखने लगेंगी। कई विदेशी कंपनियां इस दिशा में पूरी तरह रेडी हो चुकी हैं तो अपने देश में भी इस बारे में जोर-शोर से तैयारी की जा रही है। भविष्य के नए हवाई सफर पर एक नजर।

टीकैब कंपनी चीन की ई20 एयरटैक्सी

कवर स्टोरी
एन. के. अरोड़ा

उड़ने वाली कारें यानी फ्लाइंग कार या रोडेबल एयरक्राफ्ट यानी ऐसी गाड़ियां, जो सड़कों पर चल भी सकें और जरूरत पड़ने पर उड़ान भी भर सकें। अब ये केवल हॉलीवुड की फिल्मों का हिस्सा भर नहीं हैं बल्कि ये हकीकत है। हां, यह बात अलग है कि अभी इसका उपयोग लोगों ने शुरू नहीं किया है। अभी ये कारें सीमित स्तर पर प्रोटोटाइप, परीक्षण, नियामक मंजूरी और टेस्ट फ्लाइट के दौर से गुजर रही हैं। अभी सड़क पर दौड़ने और उड़ान भरने वाली ये कारें, आम लोगों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन चीन, जापान, अमेरिका और यूरोप के कई देशों में ये कारें जल्द से जल्द आम लोगों के घरों के गैराज में दिखने लगेंगी।

कई स्तरों पर हो रही तैयारी: साल 2025 के अंत तक दुनिया भर में कई कंपनियां ऐसी इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक ऑफ एंड लैंडिंग (वीटीओएल) कारों को पूरी तरह तैयार कर लेंगी, क्योंकि इन कंपनियों की फ्लाइंग कारों की प्रगति महत्वपूर्ण चरणों में है। कुछ देशों और कंपनियों ने तो अपनी कारों की सूची भी सोशल मीडिया पर जारी कर दी है। इस समय दुनिया भर के अलग-अलग देशों में करीब 250 ऐसी कंपनियां हैं, जो उड़ने वाली कारों यानी फ्लाइंग टैक्सियों या वीटीओएल परियोजनाओं पर काम कर रही हैं। कई प्रोटोटाइप पहले ही हवा में उड़ान भर चुके हैं, कुछ मानव पायलट के साथ और कुछ बिना इंसानी ड्राइवर के। उदाहरण के लिए टर्की में सीजेरी का प्रोटोटाइप और जापान में स्काई डाइव का प्रोटोटाइप हवा में उड़ान भर चुका है। कई कंपनियां एयर टैक्सी शुरू करने की बिल्कुल व्यावहारिक योजनाएं बना चुकी हैं, तो कुछ देशों ने सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। कहने का मतलब उड़न कारें यानी, जमीन और हवा दोनों पर चलने वाली कारें भले अभी दुनिया में आम लोगों के इस्तेमाल में आना शुरू न हुई हों, पर इनके एक साथ पूरी दुनिया में इतनी बड़ी संख्या में प्रोजेक्ट काम कर रहे हैं कि दिन-रात इनके बारे में बातें होना स्वाभाविक है। इनके उज्ज्वल भविष्य को देखते हुए दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति इन कारों पर भारी निवेश भी कर रहे हैं।

स्काई ड्राइव, जापान की एयरटैक्सी

जॉबी एविएशन, अमेरिका की ईवीटॉल

कई कंपनियां हैं एक्टिव: आज दुनिया के जिन देशों में प्रमुख कंपनियां ऐसी फ्लाइंग कारें बनाने में जुटी हुई हैं, उनमें संयुक्त राज्य अमेरिका में जॉबी एविएशन ने एफएए से एयर करियर प्रमाणपत्र हासिल किया है और डेल्टा एयरलाइंस के साथ साझेदारी की है। इसी तरह आर्चर एविएशन ने भी यूनाइटेड एयरलाइंस से 10 मिलियन डॉलर प्राप्त किया है। इसी तरह जेस्टन वन नामक एक व्यक्तिगत उड़न वाहन भी अमेरिका में विकसित किया गया है, जिसकी कीमत 1 लाख 28 हजार डॉलर है और जिसे उड़ाने के लिए किसी पायलट लाइसेंस की जरूरत नहीं है। जबकि चीन एक्सपेंग एयरोहॉट दुनिया की पहली ऐसी कंपनी है, जिसने बिना पायलट के यात्री उड़ानों के लिए नियामक स्वीकृति प्राप्त कर ली है। इसने लैंड एयरक्राफ्ट करियर नामक मॉड्यूलर कार विकसित की है, जिसमें एक फोल्डेबल ईवीटीओएल है। टीकैब टैग कंपनी ने ई-20 नामक मानवयुक्त ईवीटीओएल विकसित की है। इसी तरह ब्राजील ने ईव एयर मोबिलिटी, जापान की स्काई ड्राइव और जर्मनी की लिलियम बोलोकॉप्टर कंपनियों ने भी अपनी-अपनी उड़न कारें विकसित कर ली हैं और इन सबकी हवा में उड़ने और जमीन में जरूरत पड़ने पर चलने वाली ये कारें परीक्षण और अपग्रेडेशन की प्रक्रिया से गुजर रही हैं। इन दिनों इसी काल्पनिक सच को हकीकत में बदलने के लिए विकसित देशों में दर्जनों उड़न कारें अपनी बुनियादी उड़ाने भर रही हैं या दूसरे शब्दों में ट्रेंड हो रही हैं।

ऐसे आई सुर्खियों में: फ्लाइंग कारों की चर्चा अचानक इसलिए बढ़ी है, क्योंकि पिछले दिनों दो उड़ने वाली कारें एक फ्लाइंग शो के दौरान हवा में ही टकरा गईं और एक बड़ा हादसा हो गया। यह अलग बात है कि इसमें कोई जनहानि नहीं हुई। दरअसल, चीन के जिलिन में बीते 16 सितंबर 2025 की दोपहर को चल रहे चांगचुन एयर शो के दौरान एक्सपेंग एयरोहॉट की दो वीटीओएल आपस में टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गईं। इस टक्कर से एक यात्री घायल हो गया, जिसे जानलेवा चोट नहीं लगी। लेकिन इस दुर्घटना की वजह से रातों-रात पूरी दुनिया की आटोमोबाइल इंडस्ट्री में वीटीओएल कारों के किस्से पूरी तरह से छा गए और हर किसी को पता लग गया कि उड़ने वाली कारें अब विज्ञान कथा भर नहीं हैं, वास्तविक जिंदगी का हिस्सा बनने की कगार पर हैं। निकट भविष्य में इनका उपयोग शहरी परिवहन, आपातकालीन सेवाओं और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में बहुत कॉमन हो जाएगा।

सुरक्षा है बड़ा मुद्दा: जिस तरह इन दिनों चीन में हुई हवाई दुर्घटना के कारण दो एयर टैक्सियों के आपस में भिड़ जाने पर खूब चर्चा हो रही है, उससे उड़ने वाली कारों यानी ईवीटीओएल की तकनीकी सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठ खड़े हुए हैं। माना जाता है कि ऐसी काल्पनिक कारों का यह पहला मिड एयर कॉलिशन है। लेकिन यह अकेला कारण भी नहीं है, जिसकी वजह से इन उड़न कारों की बातें हो रही हैं। दरअसल, अब नए मॉडल के नई लाइफस्टाइल को सपोर्ट करने वाले शहरों के बसाए जाने की बात भी हो रही है। इन्हीं नए शहरों की जरूरतों को ध्यान में रखकर अर्बन एयर मोबिलिटी पर जबर्दस्त चर्चा हो रही है, क्योंकि भविष्य के शहरों में लोगों के पास इतना समय नहीं होगा कि वे ट्रैफिक में घंटों फंसे रह सकें। इसलिए ऐसी कारों की जरूरत जबर्दस्त ढंग से पैदा होने वाली है, जो हवा में उड़कर मिनटों में एक जगह से दूसरी जगह कई किलोमीटर दूर पहुंच सकती हैं।

सिर्फ सुरक्षा का ही नहीं, वास्तव में इन वाहनों की उड़ान और लैंडिंग की अनुमति भी एक बड़ी समस्या होगी, जिस पर इन दिनों सिस्टमेटिक ढंग से प्लानिंग हो रही है। लोगों को उत्सुकता है कि एयर ट्रैफिक रेगुलेशन, पायलट ट्रेनिंग, बैटरी रिलायबिलिटी, इस तरह की सभी समस्याएं एक-एक करके हल हों ताकि उड़ने वाली कारें अब फिक्शन न रह जाएं।

बहरहाल, विशेषज्ञ कहते हैं कि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सन 2030 तक दुनिया के अनेक बड़े शहरों के आसमान में हवा में उड़ान भरने वाली कारें दिखने लगेंगी। *

एक्सपेन एयरोहॉट ईवीटॉल, चीन

भारत में भी जल्द उड़ेंगी एयरटैक्सी

केवल विदेशों में ही नहीं अपने देश भारत में भी ईवीटॉल विकसित करने में कुछ कंपनियां सक्रिय हैं। डीजीसीए ने पंजाब की एक कंपनी के एयरटैक्सी मॉडल को डिजाइन अप्रूवल सर्टिफिकेट भी दे दिया है। एयरटैक्सी के टेकऑफ और लैंडिंग के लिए वर्टिपोर्ट बनाने की प्लानिंग पर भी काम किया जा रहा है। बेंगलुरु की एक कंपनी भी इस दिशा में एक्टिव है। सब कुछ प्लानिंग के अनुसार फाइनल होने पर वर्ष 2028 तक दिल्ली-एनसीआर में एयर टैक्सी का परिचालन शुरू हो सकता है। इसके बाद कोलकाता, मुंबई जैसे अन्य मेट्रो शहरों में भी एयरटैक्सी चलने की संभावना है।

अवेयरनेस / संध्या सिंह

इन दिनों लगभग रोज ही साइबर फ्रॉड की अनेक घटनाएं घटित हो रही हैं। साइबर क्रिमिनल्स नए-नए तरीकों से लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। ऐसे में जरा सी लापरवाही आपका भारी आर्थिक नुकसान करा सकती है। इसलिए साइबर वर्ल्ड में हमेशा एलर्ट रहें।

खूब हो रहा साइबर फ्रॉड ना बरतें कोई लापरवाही

आजकल सोशल मीडिया पर साइबर तस्करी, साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी, डीपफेक में काफी बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसी धोखाधड़ी अब आम हो गई है।

सोशल मीडिया पर फ्रॉड नेटवर्क: हाल के दिनों में लोगों को व्हाट्सएप पर नकली ई-चालान मिलना, नकली बिजली, पानी, गैस, केबल के बिल मिलने जैसी चीजें आम हो गई हैं, जिनमें व्हाट्सएप पर मैसेज भेजा जाता है और उसमें यह वॉर्निंग दी जाती है कि यदि समय पर बिल का भुगतान नहीं किया गया, तो उनका कनेक्शन काट दिया जाएगा। हड़बड़ी में लोग अकसर व्हाट्सएप में आए उस बिल पर क्लिक कर देते हैं और कुछ समय बाद उन्हें पता चलता है कि उनके खाते से काफी पैसे निकाल लिए गए हैं। यहां तक कि फेसबुक पर भी बहुत रोचक कहानियां बनाकर उन्हें डाल दिया जाता है और जब लोग उन्हें पढ़कर आगे की कहानी जानने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करते हैं, तो उस लिंक पर कई बार एडल्ट साइट्स से उनका सामना होता है या गलत लिंक पर क्लिक करने के कारण वे साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं।

हो रहा भारी नुकसान: साइबर क्राइम अब एक ऐसी समस्या के रूप में सामने आ रहा है, जो हमारा पैसा और मन की शांति दोनों को खत्म कर रहा है। साइबर अपराध पर 254वीं संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट ने इस बात का खुलासा किया है कि साइबर ठगी के जरिए 31,500 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ है। इस साल साइबर अपराधी एक साथ कई मोर्चों पर सक्रिय हैं। संसदीय रिपोर्ट भी इस बात की पुष्टि करती है कि साइबर अपराधी एक साथ कई हथकंडे आजमा रहे हैं। लोग यह समझते हैं कि इनसे बचने के उपाय, अत्यधिक कुशल हैकर्स का काम है, लेकिन इससे आम लोगों को यह समझना होगा कि उनको नेविगेट करने की क्षमता हम सबमें होनी जरूरी है।

बीते जुलाई माह में गुरुग्राम पुलिस द्वारा एक ऐसे कॉल सेंटर का भंडाफोड़ किया गया, जहां जालसाज वीआईपी नंबर्स और पुलिस स्टेशन की पृष्ठभूमि का एआई द्वारा उपयोग करके वीडियो कॉल पर कानून अधिकारी के रूप में पेश आते थे, जो लोगों को उनके नाम पर एक पैकेट में अवैध वस्तुएं होने का हवाला देकर उन्हें गिरफ्तार कर लेने के लिए डराते थे और उन्हें यह धमकी देते थे कि यदि वह तुरंत अपनी जमानत या वैरीफिकेशन के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान नहीं करते, तो उन्हें कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है। पुलिस द्वारा छापे में स्क्रीन स्क्रिप्ट और जाली आईडी मिली, इसके बाद कई गिरफ्तारियां हुईं, जिनका लिंक दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के नेटवर्क से था, जो सीधे भारतीयों को अपना निशाना बना रहे थे।

जागरूकता है जरूरी: यह सही है कि आज के दौर में साइबर अपराध इतने जटिल हो गए हैं और लोगों को ठगी का शिकार बनाने के उनके तरीके इतने दबे छिपे होते हैं कि आम लोगों में जागरूकता का अभाव होने के कारण वे सहजता से इसका शिकार हो जाते हैं। मसलन, अगर आपको कोई पुलिस अधिकारी होने का दावा करने वाले का कॉल आता है तो उनसे यह पूछा जा सकता है कि वीडियो कॉल के जरिए भला गिरफ्तारी कैसे हो सकती है? इस तरह की समझदारी और अवेयरनेस से फ्रॉड से बच सकते हैं।

बिना डरे रहें सजग: इन जटिल साइबर अपराधों के खिलाफ सुरक्षा के समाधान या तरीके इतने कठिन नहीं है, जितने हम समझते हैं। हमें हर चीज पर सवाल उठाना सीखना होगा और जीरो ट्रस्ट नीति अपनानी होगी। एक बार जब हम ऐसे मामले में जीरो ट्रस्ट नीति अपनाने लगते हैं तो साइबर सुरक्षा आसान हो जाती है। किसी भी लिंक अटैचमेंट या मैसेज पर जाने से पहले बिना सोचे-समझे क्लिक नहीं करना चाहिए, क्योंकि साइबर जगत में हर अंजान को जांचने-परखने की नीति अपनाएं। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले सोचें, विचार करें। वेडिंग इंविटेशन या ई-चालान की पीडीएफ/जेपीईजी फाइल होनी चाहिए, न कि एपीकेएस। एपीकेएस पर क्लिक करने का ही मतलब है आप हैकर को क्लिक कर रहे हैं। किसी को भी अपना ओटीपी या यूपीआई पिन या स्क्रीन शेयर न करें। क्योंकि कानून आपको इन्हें साझा करने के लिए नहीं कह सकता। ऑड यूआरएलएस, नए हैंडल्स, मिस मैच्ड लोगो, भ्रम पैदा करने वाली ईमेल आईडी पर क्लिक न करें। अगर आपके खाते से पैसों की ठगी हो जाती है तो 1930 नंबर पर कॉल करें और अपने बैंक को तुरंत फोन करके इसके बारे में सूचित करें। कुल मिलाकर ऑनलाइन ठगी से बचने के लिए बिना डरे एलर्ट रहना जरूरी है। *

कविता
आरती आस्था

छोड़ना

मां छोड़ देती है
सब कुछ
अपने बच्चे के लिए।
वही बच्चा होकर बड़ा
छोड़ देता है
मां को
अपने प्रेम के लिए।
छोड़ते हैं दोनों ही
अपने-अपने प्रेम के लिए।
पर लगाना अनुमान
है लगभग असंभव
किसका छोड़ना
और किसका छूट जाना
होता है
ज्यादा पीड़ादायक।

व्यंग्य / भूपेंद्र भारतीय

लचकलाल को भी मिले नोबेल पुरस्कार

भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि, भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह भी क्यों नहीं प्रसिद्ध बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं!

हर साल अक्टूबर के महीने में नोबेल पुरस्कार का हल्ला रहता है। इस बार भी हल्ला रहा। लचकलाल फिर नोबेल पुरस्कार के लिए बेचैन हुए। वह नोबेल पुरस्कार चाहते हैं, भ्रष्टाचार के मामले में। उनका कहना है, इस क्षेत्र में उनसे अच्छा और श्रेष्ठ कार्य किसी ने नहीं किया है, ना ही कोई कर सकता है। इस क्षेत्र में उन्होंने जितने नवाचार किए हैं, उतने तो अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश ने अपना माल बेचने के लिए विश्व शांति के क्षेत्र में भी नहीं किए होंगे।

लचकलाल का यह कहना है कि भ्रष्टाचार में गोपनीयता के मामले में उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए। वह कैसे-कैसे टेबल के नीचे से सेवा शुल्क लेकर जनसेवा करते रहे हैं, वो रिकॉर्ड बने हैं। लचकलाल भ्रष्टाचार में यूपीआई की भी सुविधा ले रहे हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार को ऑन लाइन कर दिया है। उनकी टेबल पर घूस ऑन लाइन भी ली जाती है-जल्द यह तख्ती भी लग सकती है। लचकलाल को लगता है, वे अपनी भ्रष्टाचार की सेवाओं से विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। भ्रष्टाचार को उन्होंने अब शासकीय शिष्टाचार मान लिया है। इस प्रतिभा के पीछे उन्होंने ऐसी दिव्य दृष्टि पाई है कि एक बार में ही वह अच्छे से अच्छे ईमानदार अधिकारी को देखते ही समझ जाते हैं, यह अधिकारी अपनी सेवा कितने में प्रदान करेगा? इसकी सेवा का लाभ कैसे लेना है? इसकी निष्ठा का कितना दाम लगाना है? लचकलाल यह सब अपनी भ्रष्टाचारी दिव्य दृष्टि से कुछ ही दिनों में ताड़ लेते हैं कि साहब टेबल के कितने ऊपर और टेबल के नीचे कितने तक धंसे हैं? लचकलाल ने अपनी इस दिव्य दृष्टि और कला के सहारे बहुत से नवागत अधिकारियों, कर्मचारियों को भी भ्रष्टाचार के मामले में प्रशिक्षित किया है। कोई कितना ही ईमानदार व्यक्ति शासकीय सेवा में 'सेवा परमोधर्मः' की भावना से आए, लेकिन उनकी दिव्य दृष्टि उसे भ्रष्टाचार की कला बहुत ही जल्दी सीखा देती है। इस कला को सीखने के बाद वह नवागत अधिकारी भ्रष्टाचार के दूध में पताशे(बताशे) की तरह घुल जाता है। लचकलाल भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने में उसी तरह से दक्ष हैं, जैसे इन दिनों मिस्टर ट्रंप विश्व शांति की चाशनी बनाने के लिए अपनी वैश्विक चम्मच हिला रहे हैं। वह बात अलग है कि चाशनी बन नहीं रही है। इस बार भी तथाकथित विश्व शांतिदूत नोबेल पुरस्कार के लिए चम्मच हिलाते ही रह गए।

खैर! मिस्टर लचकलाल अपने अभियान में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने और उसमें से जलेबी निकालने से कोई नहीं रोक सकता है। उनके पास भ्रष्टाचार के मामले में भ्रष्टों का जनाधार है। वे अपनी इस कला से लोकतंत्र की सेवा करना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि इस कला से राष्ट्र निर्माण भी आसानी से किया जा सकता है। कम बजट में सड़कों, पुलों, सरकारी भवनों और सेवाओं का कार्य पूरा हो जाता है। भ्रष्टाचार उनके लिए सरकारी कार्यशैली का अभिन्न हिस्सा है। उसके बगैर अधिकारियों को कार्य करने में मजा नहीं आता और सरकारों को सरकार चलाने में मजा नहीं आता। लचकलाल की मानें तो वह जनता और सरकार के बीच भ्रष्टाचार, पुल का काम करते हैं। भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह क्यों नहीं बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं! उन्हें लगता है कि वह भ्रष्टाचार विषय के मामले में बुद्धिजीवी बन गए हैं। अब आखिर उन्हें क्यों नहीं इस क्षेत्र में सेवा, शोध और नवाचार के लिए नोबेल पुरस्कार मिले! *

लघुकथा / अलका जैन 'आराधना'

प्रेरणा

आईआईटी में सेलेक्शन न होने से हताश रौनक, रेल की पटरियों के किनारे चला जा रहा था। एक पल के लिए उसके मन में खुद को खत्म करने का ख्याल आ रहा था। अचानक मम्मी के शब्द उसके कानों में गूंजने लगे, 'रेल की पटरियां रेल को गंतव्य तक पहुंचाती हैं। बेटा, इनसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा लेनी चाहिए... क्योंकि वास्तव में चलना ही जिंदगी है।'

रौनक के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह सोच रहा था कि आईआईटी में सेलेक्शन ना होना तो एक पड़ाव भर है, जीवन में और भी बहुत कुछ है करने के लिए। अब वह मुस्कुराते हुए घर वापसी का फैसला कर चुका था। घर पहुंचा तो मम्मी-पापा बेसब्री से उसका ही इंतजार कर रहे थे। दोनों ने एक-साथ उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'तुम्हारा पसंदीदा मूंग की दाल का हलवा बनाया है, इसे खाओ और नई राह पर आगे बढ़ने की शुरुआत करो। जिंदगी किसी मोड़ पर खत्म नहीं होती, नई शुरुआत कहीं से भी की जा सकती है।'

रौनक अपने मम्मी-पापा के पैरों में झुक गया। उसे लग रहा था कि रेल की पटरियों ने उसे जीवन से पलायन की नहीं जीवन को गले लगाने की प्रेरणा दे दी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रेमानुभूति में भीगी कविताएं

प्रेम एक ऐसा विषय है, जिस पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं लेकिन कोई भी रचना इसके बारे में स्थायी या अंतिम सच साबित नहीं हो पाती। दरअसल, यह इंसानी मनोजगत में उपजने वाली भावनाओं से निर्मित ऐसी दुनिया होती है, जिसे हर इंसान अलग तरीके से अनुभूत करता है। सविता सिंह के नए कविता संग्रह 'प्रेम भी एक यातना है' की कविताएं प्रेम के ऐसे ही अनदेखे, अबूझ क्षितिज से हमारा परिचय कराती हैं। यहां उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियां बड़ी कोमलता के साथ प्रकृति और समष्टि में समाहित हो जाती हैं। इसी बिंदु पर उनकी कविताओं के व्यापक अर्थ हमारे सामने उद्घाटित होते हैं। प्रेम के जीवन में पदार्पण का मनोहारी बिंब इन पंक्तियों में देख सकते हैं, *'पूरा-पूरा दिन संगीत सा बजता रहता है आजकल/ बेजान दोपहरें भरी रहती हैं तितलियों के रंगों से/ मधुमक्खियों के पंखों से उपजती धुनों से।'* (प्रेम) इसी तरह एक अन्य कविता 'प्रेमरत' की ये पंक्तियां शरीर के स्तर से बहुत गहन मन-आत्मा के किसी तल पर घटित हो रही अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं, *'अभी हमारे पास कहने को क्या था/हम तो भाषा में थे ही नहीं/हमारे पास महज अव्यक्त आवाजें थीं कुछ/ शब्द दूर थे हमसे।'* कह सकते हैं, आज के अमानवीय होते जा रहे हिंसा से आक्रांत युग में ये कविताएं, हमारे भीतर कुछ बेहतर बचे रहने की उम्मीद कायम रखने का संबल देती हैं। *

पुस्तक: प्रेम भी एक यातना है (कविता संग्रह), **लेखिका:** सविता सिंह, **मूल्य:** 199 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली

आयोजन
वीना गौतम

राजस्थान में अजमेर के निकट पुष्कर में आयोजित होने वाला धार्मिक-सांस्कृतिक पुष्कर मेला, पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहां की भौगोलिक विशिष्टता और इससे जुड़ी धार्मिक मान्यताएं इस स्थल को और भी महत्वपूर्ण बना देते हैं। आगामी 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक आयोजित होने वाले इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

देश की धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना का संगम पुष्कर मेला

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश की आत्मा उसकी लोक-संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में बसती है। ऐसी ही लोकधर्मी परंपराओं का वाहक है पुष्कर मेला। पुष्कर मेला न केवल राजस्थान बल्कि संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का प्रतीक है। पुष्कर मेला हर साल कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है।

मेले से जुड़ी धार्मिक मान्यताएं: पुष्कर भारत का अद्वितीय नगर है। सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा का देश में एकमात्र मंदिर यहीं स्थित है। पुष्कर की धार्मिक मान्यता यह है कि ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करने के बाद यज्ञ करने के लिए एक पवित्रस्थल की खोज कर रहे थे, तब एक कमल पुष्प उनकी हथेली से गिर पड़ा और यह जहां गिरा, उस स्थान पर पुष्कर झील बन गई। इसलिए यह स्थल पुष्कर तीर्थ कहलाता है।

पुष्कर झील में स्नान करते श्रद्धालु

कार्तिक पूर्णिमा के दिन इस झील में स्नान करना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन ब्रह्माजी स्वयं झील के जल में स्नान करने के लिए आते हैं, जो व्यक्ति इस दिन यहां स्नान करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि पुष्कर मेला के समय देश के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालु और साधु-संत यहां पवित्र स्नान के लिए पहुंचते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह मेला केवल स्नान या पूजा का आयोजन नहीं बल्कि धर्म, भक्ति और लोकआस्था की जीवंत अभिव्यक्ति है। इस अवसर पर पुष्कर झील के घाटों पर होने वाले दीपदान और आरती का दृश्य भारतीय अध्यात्म का जीवंत रूप प्रस्तुत करता है।

लोकजीवन-परंपराओं का महाकुंभ: पुष्कर मेला सिर्फ भारतीय लोक-संस्कृति का ही बहुत बड़ा उत्सव नहीं है, यह पशु व्यापार का भी बहुत बड़ा मेला है। यहां समूचे भारत के ग्रामीण जीवन की जीवंत झांकी देखने को मिलती है। राजस्थान के विभिन्न जिलों से लेकर इस मेले में हरियाणा, पंजाब, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक के ग्रामीण लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा, गीत, नृत्य और हस्तशिल्प के साथ आते हैं। पुष्कर मेले में होने वाले लोकनृत्य प्रतियोगिताओं में मटकी दौड़, ऊंट सजावट, ग्रामीण खेल, लोकसंगीत, कठपुतली, नाटक और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुनें, भारत की विविधता में एकता का अद्भुत संदेश देती हैं। यह मेला वास्तव में ग्रामीण भारत की सजीव आत्मा पेश करता है। यहां महिलाएं पारंपरिक लहंगे, ओढ़नी आदि में सजी दिखती हैं और पुरुष रंग-बिरंगी पगड़ियों में सजते हैं। इसी वेशभूषा में ये लोग आयोजित होने वाले लोक गीत-संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यहां की रंग-बिरंगी भीड़ वास्तव में भारत की जीवंत संस्कृति की धड़कन है, जिसने आधुनिकता के बीच भी अपनी जड़ें मजबूती से जमा रखी हैं।

व्यापार-पर्यटन का अवसर: जैसा हम सब जानते हैं कि पुष्कर मेले में भारत का सबसे बड़ा पशु मेला भी लगता है। विशेष रूप से ऊंट और घोड़ों के व्यापार के लिए। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में पशुधन आजीविका का महत्वपूर्ण आधार है। इस मेले के दौरान यहां हजारों ऊंट, घोड़े और गाय, बिकने के लिए आते हैं। इस खरीद-फरोख्त के जरिए स्थानीय अर्थव्यवस्था को खूब बल मिलता है। इसके साथ ही इस मेले

आयोजित होता है बहुत बड़ा पशु मेला

का पर्यटन उद्योग के लिहाज से भी बहुत महत्व होता है। पुष्कर मेले के दौरान देश-विदेश से लाखों सैलानी यहां आते हैं। विदेशी पर्यटक विशेषकर यहां भारतीय संस्कृति, योग, संगीत और अध्यात्म का जीवंत अनुभव करने आते हैं। इस मेले में स्थानीय हस्तशिल्प, कपड़े, गहने और लोककला की बिक्री से ग्रामीण कारीगरों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय लैंडमार्क के रूप में प्रतिष्ठित: आज पुष्कर मेला केवल एक पारंपरिक आयोजन भर नहीं है। यह वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है। भारत सरकार और राजस्थान पर्यटन विभाग ने इसे ग्लोबल फेयर के रूप में विकसित किया है। सोशल मीडिया और यात्रा चैनलों के कारण पुष्कर मेले की पहचान दुनिया के कोने-कोने में पहुंच चुकी है। पुष्कर मेले के दौरान यहां योग शिविर, कल्चरल वर्कशॉप और डेजर्ट सफारी जैसे आयोजन पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। आज जब अपनी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत बहुत करीने से प्रस्तुत कर रहा है, तब पुष्कर इस गतिविधि का महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरा है। आज पुष्कर मेला अपनी लोक-आध्यात्मिक पहचान के लिए राष्ट्रीय लैंडमार्क की ख्याति हासिल कर चुका है। यह मेला दर्शाता है कि भारतीय सभ्यता, लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति में भी फलती-फूलती है। *

अनोखा भौगोलिक स्थल भी है पुष्कर

पुष्कर अरावली पर्वतमाला के बीच में स्थित है। जहां रेगिस्तान का शुष्क भू-भाग और झील का शांत जल एक अद्भुत विरोधाभास रचते हैं। यह क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों में गिना जाता है। क्योंकि राजस्थान में स्थित यह ऐसा क्षेत्र है, जहां जल और मरुस्थल का साझा अस्तित्व देखने को मिलता है। ऐसी विविधता का दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अक्टूबर और नवंबर के महीने में पुष्कर का तापमान बेहद सुहावना होता है। इस कारण इस मौसम में यहां देश-विदेश के लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों के लिए यह मौसम और पुष्कर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण आकर्षण का जरिया बन जाती है। झील के चारों ओर फैले घाट, मंदिरों की कतारें और दूर तक फैले रेत के टीले, इस स्थान को एक आध्यात्मिक केंद्र बना देते हैं। यही कारण है कि आज के दौर में पुष्कर की प्रतिष्ठा एक वैश्विक, सांस्कृतिक स्थली के रूप में भी है।

दीपावली के बाद कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देव उठनी, देवोत्थानी या प्रबोधिनी एकादशी पर्व मनाते हैं। पुराणों में इस दिन की पूजा, व्रत का बहुत महत्व बताया गया है। इसके महात्म्य के बारे में जानिए।

अत्यंत पुण्यकारी-शुभ फलदायी प्रबोधिनी एकादशी व्रत-पूजन

पर्व-परंपरा
प्रभा पारिक

चातुर मास वर्षा काल के चार महीनों के शयन के बाद जब देव उठते हैं, उस दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि होती है। इसी शुभ अवसर से मनुष्यों को देवताओं के आह्वान का अवसर प्राप्त होता है। इसी तिथि से मांगलिक कार्यों, जैसे गृह प्रवेश, विवाह आदि आरंभ होते हैं।

धार्मिक मान्यता: प्रबोधिनी एकादशी की मंगल बेला पर भगवान विष्णु का विवाह शालीग्राम रूप में वृंदा तुलसी के साथ किया जाता है। सुबह तुलसी के चौरे, क्यारी, गमले को साफ करके गेरू, चूने से मांड़ने अथवा रंगोली बना कर सजाया जाता है। फूल, धूप, दीप, आरती की जाती है। मौसमी फलों के साथ मूली, केला, रूई, ग्वार फली, सुआली आदि अर्पण करते हैं। शाम के समय प्रतीकात्मक रूप से घरों में, मंदिरों में तुलसी का विवाह शालिग्राम जी के साथ रचाया जाता है। इस विवाह में घर में पुत्री के विवाह में दिया जाने वाला श्रृंगार और सुहाग की वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम अपने घर-परिवार की कन्याओं के विवाह पर करते हैं। ये श्रृंगार की सामग्री किसी भी नव-विवाहिता स्त्री, पुरोहित या सुहागन को देने की प्रथा है। इस दौरान मंगल गीतों के साथ इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिस घर में कन्यादान का अवसर न मिलने की स्थिति हो, वे तुलसी विवाह को आयोजित करके कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

व्रत का महात्म्य: पुराणों में बताया गया है कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्त्र अश्वमेघ यज्ञों और सौ राजसूय यज्ञों के बराबर माना जाता है। जिस वस्तु या पद या आकांक्षा को प्राप्त करना कठिन लगे, इस व्रत को करने से वो सहज ही प्राप्त हो जाती है। इस दिन रात्रि जागरण का विशेष महत्व है। माना जाता है कि प्रबोधिनी एकादशी के दिन किए गए व्रत, दान-पुण्य का फल, समस्त तीर्थों की यात्रा करने, गौ, स्वर्ण, भूमि आदि के दान से मिलने वाले फल के समतुल्य होता है। इस दिन व्रत और पूजन से निःसंतान को संतान की प्राप्ति होती है। यह व्रत उद्धार करने वाला और भगवान में आस्था बढ़ाने वाला माना जाता है। इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करने से भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं। साधक के पितरों को सद्गति की प्राप्ति होती है। पिछले हजार जन्मों में किए गए पाप भी इस एकादशी को रात्रि-जागरण करते हुए श्री नारायण जप करने से नष्ट हो जाते हैं। इस दिन व्रत के दौरान श्रद्धापूर्वक 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का जाप करना बहुत कल्याणकारी और पुण्य फलदायी होता है।

मनाते हैं कई रूपों में: प्रबोधिनी एकादशी के पर्व को अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। यही वजह है कि विभिन्न राज्यों में इसे अलग-अलग तरह से मनाते हैं। इस दिन को पवित्र मानते हुए नर के रूप में नारायण एवं नारी के रूप में नारायणी की स्तुति करते हैं। तुलसी का महत्व, हमारे स्वास्थ्य, सुख समृद्धि, वास्तु से जोड़कर देखा जाता है। गुजरात में दीपावली के पूर्व की एकादशी से देव उठनी एकादशी तक प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर घर के द्वार पर रंगोली, तुलसी पूजा और दीपमाला सजाने की प्रथा है। यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन दीपमाला के साथ पूर्ण होती है। *

विशिष्ट पेड़ / वीना

कई तरह से उपयोगी फालसे का पेड़

फालसा का वैज्ञानिक नाम ग्रेविया एशियाटिक है। यह एक छोटा झाड़ीदार पेड़ होता है, जो गर्म और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में उगता है। फालसा को अपने देश में एक लोकप्रिय फल के रूप में जाना जाता है। इसका स्वाद खट्टा, मीठा और ताजगी भरा होता है। यह पेड़, हरे, अंडाकार, मोटे और खुरदरे पत्तों वाला होता है, इसमें छोटे सफेद या हल्के गुलाबी फूल आते हैं, जबकि छोटे गोलाकार, नीले या काले रंग के फल लगते हैं।

कई राज्यों में होती है खेती: फालसा का पेड़ देश के ज्यादातर हिस्सों में पाया जाता है। मसलन, उत्तर भारत में पंजाब, हरियाणा। मध्य भारत में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश। पश्चिमी भारत में राजस्थान, गुजरात तथा पूर्वी भारत में बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल आदि में भी फालसे की खेती की जाती है। इस तरह देखें तो यह लगभग भारत के हर क्षेत्र में उगता है। दरअसल, यह गर्म और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से फलता-फूलता है। दोमट और हल्की बलुई मिट्टी में विशेष तौर पर फालसा का पेड़ तेजी से बढ़ता और विकसित होता है। अगर व्यावसायिक तौर पर इसकी खेती करें तो एक से दो मीटर की दूरी पर पौधे लगाए जाने चाहिए, समय-समय पर इसकी पुरानी टहनियों को काटते रहने से इसका विकास तेजी से होता है और पैदावार भी अच्छी होती है।

आर्थिक रूप से लाभकारी: फालसे की खेती से किसानों को कई तरह के लाभ होते हैं। फालसा के छोटे पेड़ हर साल 5 से 10 किलोग्राम तक फल देते हैं और अगर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देखें तो 8 से 10 टन फालसे का उत्पादन हो जाता है। फालसे की खेती में लागत बहुत कम आती है। क्योंकि इसे खाद पानी की उतनी जरूरत नहीं पड़ती, जैसे दूसरे फल के पेड़ों को पड़ती है। फालसा, पेड़ लगाने के पहले या दूसरे वर्ष में ही फल देने लगता है। ताजे फलों का स्थानीय बाजार भी काफी आकर्षक है। फालसे का पेड़ सामान्यतः 10 से 15 सालों तक फल देता है।

स्वास्थ्य के लिए लाभकारी: फालसे में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। जैसे- विटामिन-ए, बी-3 और सी। साथ ही इसमें पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन और फास्फोरस जैसे खनिज तत्व भी पाए जाते हैं। फालसे में एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटीमाइक्रोबियल और एंटीइंफ्लेमेट्री गुण भी होते हैं, इसलिए फालसा की अच्छी-खासी मांग आयुर्वेदिक औषधियों में भी होती है। इसके अलावा फालसे के फल की मांग जूस, शर्बत, मुरब्बा आदि बनाने में भी होती है। *

नदी गाथा
निनाद गौतम

कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है, यह हम सब जानते हैं। लेकिन इसी के साथ सच्चाई यह भी है कि बिहार की जीवनरेखा या कहें बिहार का हर्ष भी यही कोसी नदी है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

बिहार का शोक ही नहीं हर्ष भी है कोसी नदी

बिहार का शोक और हर्ष कही जाने वाली कोसी नदी का उद्गम हिमालय की पर्वत श्रेणियों में नेपाल में होता है। 720 किलोमीटर लंबी यह नदी नेपाल में 441 किलोमीटर और बिहार में करीब 288 किलोमीटर बहती है। यह बिहार में सुपौल जिले में प्रवेश करती है और मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया, अररिया होते हुए कटिहार जिले में कुरसेला के पास गंगा में मिल जाती है।

इसलिए कहते हैं शोक: कोसी को बिहार का शोक इसलिए कहते हैं, क्योंकि हिमालय से आने वाली यह बहुप्रवाही नदी जब बिहार में प्रवेश करती है, तो इसका बहाव बहुत तेज होता है। जिस कारण यह बार-बार अपना मार्ग बदलती है। पिछली ढाई सदियों में कोसी नदी 120 किलोमीटर पश्चिम की ओर खिसककर अपना मार्ग बदल चुकी है। क्योंकि इस हिमालयी नदी में नेपाल में तीन सहायक नदियां अरुण, तामूर और सुनकोशी भी आ मिलते हैं, इसलिए जिस समय यह बिहार में घुसती है, तो इसका बहाव इतना तेज होता है कि लगभग हर साल यह नदी बिहार में बाढ़ लाने का कारण बनती है ही, यह हर साल अपने तटबंध तोड़कर प्रदेश के उत्तरी जिलों में हाहाकार मचा देती है। इसलिए कोसी को बिहार का शोक कहते हैं। इसके चलते हर साल बिहार को करोड़ों रुपए की आर्थिक हानि और काफी लोगों की जनहानि होती है।

इसलिए कहलाती है हर्ष: सच्चाई यह भी है कि एक तरफ जहां कोसी बिहार का शोक है, वहीं दूसरी तरफ यह बिहार की जीवनरेखा भी कही जाती है। क्योंकि गंगा की तरह ही हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली यह नदी हर साल बाढ़ के समय अपने साथ जो पोषक तत्वों से भरी गाद या सिल्ट लाती है, उससे उत्तर बिहार की मिट्टी बेहद उपजाऊ हो जाती है। कोसी परियोजना के तहत लाखों हेक्टेयर जमीन में सिंचाई होती है और बिहार में उत्तम दर्जे की खेती संभव होती है। यही नहीं कोसी नदी का पानी पीने और कृषि दोनो में इस्तेमाल होता है। साथ ही कोसी बिहार और नेपाल को जोड़ने वाली वह नदी है, जो सीमांचल और मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को बहुत गहरे तक प्रभावित करती है। यह नदी मिथिला और सीमांचल क्षेत्र की लोकगाथाओं और लोकगीतों का हिस्सा है। इसे मातृस्वरूपा माना जाता है और लोकगीतों और त्योहारों में कोसी का जिक्र आता है। कोसी नदी के पानी से बनने वाली विद्युत ऊर्जा से तटबंधीय सड़कें और क्षेत्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस तरह अगर कोसी नदी ने बार बार बाढ़ और तबाही दी है, तो वहीं इसी ने बिहार को उपजाऊ कृषि व्यवस्था, सिंचाई की सुविधा और कृषि आधारित समृद्ध जीवन भी दिया है।

बिहार में होता है तेज प्रवाह: जब तक कोसी नेपाल में बहती है यह इतनी बड़ी और भयावह वेग वाली नदी नहीं होती, जितना बिहार के सुपौल जिले में प्रवेश के बाद फूटती है। कोसी नदी में प्रवाहित जल की मात्रा 2166 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड है, जबकि मानसून के दिनों में इसका यही प्रवाह 18000 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड हो जाता है, इससे इसके प्रचंड वेग का अंदाजा लगाया जा सकता है। कोसी नदी का कैचमेंट एरिया लगभग 74,500 वर्ग किलोमीटर (नेपाल और भारत में मिलाकर) है। इसीलिए मानसून के मौसम में इसका जलप्रवाह देश की दो बड़ी गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के बाद सबसे ज्यादा होता है। *

बॉलीवुड / हेमंत पाल

एक समय तक ग्रामीण परिवेश और गांव की मिट्टी की सोंधी महक वाली फिल्में खूब बनती और पसंद की जाती थीं। लेकिन जैसे-जैसे व्यावसायिकता हावी होती गई और लोगों के जीवन में शहरीकरण बढ़ता गया, फिल्मी पर्दे से गांव गायब होने लगे। फिल्मों के बदलते ट्रेंड पर एक नजर।

फिल्मी कहानियों में अब नजर नहीं आते गांव

हाल के वर्षों में आई हिंदी फिल्मों की बात करें तो उसमें गांव और ग्रामीण परिवेश की कहानियां बिल्कुल गायब रही हैं या न के बराबर ही नजर आई हैं। कथानकों से गांव विलुप्त होने का मतलब है, देश की 60% आबादी सिनेमा से गायब हो गई। अब जो फिल्में बनाई जा रही हैं, उनकी कहानियां 40% शहरी आबादी पर केंद्रित रहती हैं। इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता कि गांव के जीवन की कहानियों से हिंदी सिनेमा का बॉक्स ऑफिस समृद्ध नहीं हो सकता। लेकिन समानांतर सिनेमा का तो मूल आधार ही ग्रामीण पृष्ठभूमि होती है, उसे ही इन कहानियों का प्रतिबिंब कहा जाता है। 'अंकुर', 'पार', 'दो बीघा जमीन', 'सूरज का सातवां घोड़ा' और 'अंतर्नाद' जैसी फिल्में ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करने में सफल रहीं। लेकिन अब ऐसी फिल्में भी नहीं बनती हैं।

गांवों से दूर हो रही फिल्में: याद कीजिए कि पिछले कुछ सालों में ऐसी कोई नई फिल्म देखी, जिसमें गांव, वहां का जीवन और गांव वालों की पीड़ा नजर आई हो! हाल ही में एक फिल्म 'लापता लेडीज' जरूर आई, पर उसका कथानक गांव पर केंद्रित न होकर, बदल गई दो दुल्हनों का था। याद नहीं आता कि आमिर खान की 'लगान' के बाद ऐसी कोई फिल्म आई हो, जिसकी पूरी कहानी गांव पर केंद्रित रही हो। आज के दौर में जो फिल्में आ रही हैं, वो हाई-सोसायटी लाइफस्टाइल और षडयंत्रों के आस-पास घूमती कहानियां हैं। उनमें कॉरपोरेट कल्चर होता है, बिजनेस के जरिए साजिशें रची जाती हैं, कंपनियों को टेकओवर करने की चालें होती हैं।

'मदर इंडिया' में दिखा वास्तविक ग्राम्य जीवन

ग्रामीण परिवेश पर बनी हिट फिल्म 'लगान'

'स्वदेश' में भी दिखी ग्रामीण परिवेश की झलक

आर्थिक कारण हैं जिम्मेदार: आज स्थिति यह है कि ज्यादातर फिल्में सौ, दो सौ और पांच सौ करोड़ के बिजनेस का लक्ष्य लेकर बनाई जाती हैं। कमाई की यही होड़ हिंदी फिल्मों से गांव के गायब होने का सबसे बड़ा कारण है। फिल्मकारों की नजर में गांव की कहानियों पर फिल्में बनाना कमाऊ विषय नहीं है। अब किसी फिल्म में गांव दिखाई भी देता है, तो किसी और संदर्भ में। मिसाल के तौर पर 'स्वदेश' जैसी फिल्म में ऐसी कोशिश की गई लेकिन यह ग्रामीण परिवेश की फिल्म नहीं थी, बल्कि स्वदेश वापसी पर आधारित थी। इस बीच पहलवानी पर 'दंगल' फिल्म आई, पर इसमें भी गांव मूल रूप में नहीं दिखा। कुछ साल पहले 'पीपली लाइव' आई थी, जो गांव की सच्चाई और समस्याओं वाली फिल्म थी। इसमें किसानों के लिए बनी योजनाओं को बाबुओं और अफसरों द्वारा हड़पने का जिक्र ज्यादा था। लेकिन बड़े तबके को यह फिल्म समझ में ही नहीं आई सो आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं रही।

ग्रामीण फिल्मों का था सुनहरा दौर: सिनेमा का एक दौर ऐसा भी आया था, जब गांव और गांव वाले ही सिनेमा की पहचान हुआ करते थे। लेकिन जैसे-जैसे सिनेमा का बाजार बढ़ा, परदे से गांव गायब होते गए। फिल्मों का इतिहास टटोला जाए, तो शुरुआती फिल्मों का कथानक गांव की पगडंडियों से होकर ही गुजरा। वी. शांताराम की 'दो बीघा जमीन', विमल रॉय की 'यादगार' और 'बंदिनी,' राज कपूर की 'आवारा', 'श्री 420' और 'बूट पॉलिश' ग्रामीण परिवेश की ऐसी फिल्में थीं, जिन्होंने देश और दुनिया को वहां की समस्याओं और उनके जीवन से रूबरू करवाया था। गांव के जीवन पर बनीं इन फिल्मों में एक अलग सी महक होती थी।

धीरे-धीरे दूर हो गई गांव की महक: सिनेमा के परदे से गांव की मिट्टी की सौंधी महक ही नहीं, लोकगीत भी गायब हो गए। यह दौर एक दो सालों में नहीं आया। 80 के दशक के बाद से ही फिल्मकारों ने धीरे-धीरे गांवों की धूलभरी पगडंडी को छोड़ दिया था। फिल्मों में खेत-खलिहान, लहलहाती फसलें, हल चलाते किसान, खेत जोतते ट्रैक्टर, गांव की चौपाल और वहां की पंचायतें गायब हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म की कुछ वेब सीरीज में गांव जरूर दिखाई दिए पर उनका फोकस अपराध और अपराधियों पर फोकस होता है। वास्तव में ग्रामीण इलाकों, गांव की कहानियों और किसानों के किरदार में निर्देशक, निर्माता और यहां तक कि दर्शकों की भी रुचि नहीं है।

अब ट्रेंड पर बनती हैं फिल्में: अब तो यह हालात हैं कि गांव का जीवन परदे से लगभग गायब ही हो गया है। अब तो एक फार्मूला हिट होते ही उस जैसी फिल्में बनने लगती हैं। आजकल यही ट्रेंड बन गया है। लेकिन किसी फिल्मकार ने 'लगान' की सफलता के बाद भी उसका अनुसरण नहीं किया। ब्लॉक बस्टर सफल हिंदी फिल्म 'शोले' वास्तव में रामगढ़ गांव की कहानी थी। लेकिन इस फिल्म में भी गांव वास्तविक रूप में नहीं था। जो गांव था, वो डाकू गब्बर सिंह और बदला लेने वाले ठाकुर साहब के बीच कहीं गुम हो गया था।

रामगढ़ गांव की पृष्ठभूमि पर बनी 'शोले'

अब तो ग्रामीण जिंदगी और वहां के रीति-रिवाजों पर फिल्में बनाने के लिए पहचाने जाने वाले राजश्री प्रोडक्शंस भी संयुक्त परिवारों और उसकी साजिशों की कहानियों पर मल्टीस्टारर फिल्में बनाने लगा है। 'नदिया के पार', 'बालिका वधु' और 'गीत गाता चल' जैसी बेहतरीन फिल्में बनाने वाली यह फिल्म निर्माण कंपनी भी गांव से शहर पहुंच गई है। दरअसल, सारा मामला व्यावसायिकता के खेल का है। ऐसे में भला कौन पिछड़ना चाहेगा। इसीलिए फिल्मी पर्दे से गांव दूर होते जा रहे हैं। *